(स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं निर्भीक राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्र)

हिन्दी दैनिक

बुद्ध का संदेश

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

एक बार फिर ट्रोलर्स के ...8

शुक्रवार, 29 अप्रैल 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 09 अंकः 130 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

हमें कम अवधि के कड़े युद्धों के लिए तैयार रहने की आवश्यकता : वायुसेना प्रमुख चौधरी

नयी दिल्ली। वायु सेना प्रमुख वी. आर. चौधरी ने बृहस्पतिवार को कहा कि मौजूदा भू–राजनीतिक हालात में भारतीय वायु सेना को कम समय में तीव्र और छोटी अवधि के संचालन के लिए तैयार रहना पड़ता है। एअर चीफ मार्शल चौधरी ने एक सम्मेलन में कहा कि बल को छोटी अवधि के युद्धों और पूर्वी लद्दाख जैसे लंबे समय तक चलने वाले गतिरोध से निपटने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता होगी। उन्होंने कहा कि भारतीय वायु सेना के हाल के अनुभव तथा भू–राजनीतिक परिदृश्य हमें हर वक्त अभियानगत और साजोसामान की दृष्टि से तैयार रहने की

जरूरत पर जोर देते हैं। उन्होंने कहा, '' मौजूदा भू–राजनीतिक हालात में भारतीय वायु सेना को कम समय में तीव्र एवं छोटी अवधि के अभियानों के लिए तैयार रहने की आवश्यकता होती है। कम से कम समय में उच्च तीव्रता वाले अभियानों के नए तरीकों के लिए संचालनात्मक संभार तंत्र में बड़े बदलाव करने की आवश्यकता होगी।'' उत्तारी सीमाओं पर भारत की सुरक्षा चुनौतियों पर एयर चीफ मार्शल चौधरी ने कहा कि भारतीय वायुसेना को सभी संभावित सुरक्षा चुनौतियों के लिए तैयार रहने की जरूरत है। उन्होंने कहा, '' बल, स्थान और समय की निरंतरता में, हमें छोटी अवधि । के युद्धों के लिए तैयार होने के साथ–साथ पूर्वी लद्दाख में जो हम देख रहे हैं, उस तरह के लंबे समय तक चलने वाले गतिरोधों से निपटने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता भी होगी।'' वायु सेना प्रमुख ने कहा कि ऐसे अभियानों के लिए ''संसाधनों को जोड़ना '' और उनके परिवहन को मुमकीन बनाने की आवश्यकता होगी।

उन्होंने कहा, '' देश की 'आत्मनिर्भर भारत' की परिकल्पना को हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण घटकों के स्वदेशीकरण के लिए एक केंद्रित कार्य योजना विकसित करने की भी जरूरत है। एयर चीफ मार्शल चौधरी ने कहा कि साजो सामान को देश की आर्थिक प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में पहचाना गया है। उन्होंने कहा, '' व्यापार करने में सुगमता लाने और भारतीय आपूर्ति श्रृंखलाओं को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए इसे एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में पहचाना गया है।

गर्मी के मौसम में कश्मीर की ठंडक का मजा लेने बड़ी संख्या में आ रहे हैं पर्यटक

जम्मू–कश्मीर । इस साल पर्यटकों की संख्या ने पिछले सभी रिकॉर्ड तोड़ दिये हैं। देश का अधिकांश हिस्सा भीषण गर्मी के प्रकोप से जूझ रहा है, यही नहीं पहाड़ी इलाकों में भी चिलचिलाती धूप पड़ रही है ऐसे में लोग राहत पाने के लिए कश्मीर दौड़े चले जा रहे हैं। कश्मीर में बेहतर हुए हालात ने भी यहां पर्यटकों की आवक बढ़ाने में मदद की है। श्रीनगर हवाई अड्डे पर दिन–रात विमानों की आवाजाही दर्शा रही है कि पर्यटन उद्योग के लिये यह सीजन बहुत अच्छा जा रहा है। श्रीनगर हो या गुलमर्ग, होटलों में सारे कमरे फुल चल रहे हैं। शिकारा वाले व्यस्त हैं, टूरिस्ट गाइडों को काम मिला हुआ है, टैक्सी और ऑटो वालों के पास अब स्टैंड पर बैठने की भी फुर्सत

नहीं है। स्थानीय लोग जहां पर्यटकों के आने से कमाई कर रहे हैं वहीं पर्यटक भी कश्मीर की वादियों में खोकर अपने जीवन के हसीन पलों का मजा उठा रहे हैं।

सिर्फ कश्मीर घाटी में ही पर्यटकों की भीड़ हो ऐसा नहीं है। माता वैष्णो देवी के दर्शनों के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु जम्मू आ रहे हैं तो इस बार अमरनाथ तीर्थयात्रियों के भी बड़ी संख्या में आने की संभावना है। अमरनाथ यात्रा के लिए पंजीकरण की शुरुआत के बाद दो सप्ताह से भी कम समय में देशभर के 20,000 से अधिक श्रद्धालुओं ने जम्मू एवं कश्मीर बैंक कांउटरों के जरिये यात्रा पंजीकरण कराया है। हम आपको बता दें कि आगामी 30 जून से 11 अगस्त के बीच अमरनाथ यात्रा आयोजित की जा रही है।

बहरहाल, कश्मीर घाटी की बात करें तो यहां का मनोरम मौसम और वादियां हर किसी को आकर्षित कर रही हैं। प्रभासाक्षी संवाददाता ने कश्मीर घूमने आये पर्यटकों से बातचीत कर उनके मन की बात जानी तो सभी ने कहा कि यहां के बारे में पहले जो भय था वह यहां आकर दूर हो गया है क्योंकि यहां के लोग भी अच्छे हैं और यहां के पर्यटक स्थलों की तो बात ही कुछ और है। पर्यटकों ने प्रभासाक्षी के साथ बातचीत में कश्मीर को धरती का स्वर्ग बताया।

भारत–जापान के संबंध 70 वर्षों में प्रत्येक क्षेत्र में मजबूत हुए हैं : प्रधानमंत्री मोदी

नयी दिल्ली। भारत और जापान के बीच राजनयिक संबंधों की 70वीं वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बृहस्पतिवार को कहा कि दोनों देशों के बीच संबंध प्रत्येक क्षेत्र में मजबूत हुए हैं, चाहे वह सामरिक हो, आर्थिक हो या लोगों के बीच परस्पर संपर्क हो। मोदी ने ट्वीट किया कि वार्षिक शिखर वार्ता के लिए जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा की भारत की हाल की यात्रा ने कोविड के बाद की दुनिया में दोनों देशों के बीच खास रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी को मजबूत करने की रूपरेखा पेश की। उन्होंने कहा, ''जैसा कि हम आज भारत और जापान के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 70 वर्षों का जश्न मना रहे हैं तो मुझे यह देखकर खुशी होती है कि हमारे संबंध प्रत्येक क्षेत्र में मजबूत हुए हैं चाहे वह सामरिक हो, आर्थिक हो या लोगों के बीच परस्पर संपर्क हो।'' विदेश मंत्रालय के अनुसार, भारत और जापान के बीच 28 अप्रैल 1952 को राजनयिक संबंध स्थापित हुए थे।

मरम्मत के बाद लकदक नजर आयेंगी 6154 बसें

लखनऊ। उत्तर प्रदेश परिवहन निगम के प्रबन्ध निदेशक आर0पी0सिंह जी के निर्देश पर मुख्य प्रधान प्रबन्धक (तकनीकी), संजय शुक्ला ने समस्त क्षेत्रीय प्रबन्धकध्समस्त सेवा प्रबन्धक, समस्त सहायक क्षेत्रीय प्रबन्धक डिपो को यात्रियों को सुविधाजनक एवं आकर्षक सेवा उपलब्ध कराने के दृष्टिगत उ0प्र0 परिवहन निगम की बसों की भौतिक दशा को उच्चीकरण करने के उद्देश्य से तीन वर्ष से अधिक आयु की समस्त बसों को डेन्ट–पेन्ट किये जाने तथा सीटों की मरम्मत एवं आवश्यकतानुसार नई रेक्सीन लगाने के निर्देश दिये थे। इस क्रम में दिनांक 25.04.2022 तक 6154 बसों को ठीक करके नया जैसा बनाया जा चुका है। बाकी शेष 187 बसों में दिनांक 30.04.2022 तक कार्य पूर्ण करा लिया जायेगा।

मंत्रियों को मिलने वाले महंगे उपहार सरकार की सम्पत्ति, 5 हजार से ज्यादा के गिफ्ट नहीं ले सकेंगे, सीएम योगी ने दिया आदेश

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मंत्रियों को परिवार संग अपनी सम्ध्पत्ति की जानकारी सार्वजनिक करने के अलावा उपहार स्ध्वीकार करने में भी सावधानी बरतनी होगी। मंत्री अब 5 हजार रुपए से ज्ध्यादा कीमत के गिफ्ट नहीं ले सकेंगे। इससे ज्ध्यादा कीमत के गिफ्ट कोषागार में जमा कराने होंगे। ये निर्देश सीएम योगी आदित्ध्यनाथ ने अपने मंत्रियों को दिए हैं। बताया जा रहा है कि मंत्रियों को इस सम्ध्बन्ध्ध बकायदा लिखित में आचार संहिता उपलब्ध्ध करा दी गई है। कहा गया है कि ऐसे प्रतीक जो सामंत शाही का बोध ा कराते हैं जैसे सोने–चांदी के मुकुट आदि, स्ध्वीकार नहीं करने चाहिए। मंत्रियों से पांच हजार से अधिक कीमत के गिफ्ट पर रोक लगाने को कहा गया है। लोक प्रतिनिधित्व अधि ानियम के तहत सभी निर्वाचित सदस्यों (मंत्री भी शामिल) के लिए सार्वजनिक आचरण के मानक तय हैं। वर्ष–2017 में पहली बार मुख्ध्यमंत्री बनने के बाद भी योगी आदित्ध्यनाथ ने मंत्रियों से अपनी सम्ध्पत्ति सार्वजनिक करने

को कहा था। सीएम योगी ने खुद इसका पालन किया। बाकी मंत्रियों को अपना ब्ध्योरा तत्ध्कालीन वित्ध्त मंत्री राजेश अग्रवाल को देना था। बताया जा रहा है कि कई मंत्रियों ने ब्ध्योरा काफी समय तक नहीं भेजा था। कई मंत्रियों की यह भी दलील थी कि विधानसभा चुनाव में वे लोग चुनाव आयोग में बकायदा शपथ पत्र दे चुके हैं। अब सीएम ने इसी मुहिम का दायरा बढ़ाते हुए इसमें परिजनों को भी शामिल कर लिया है। मंत्रियों से आचार संहिता के पालन की अपेक्षा सीएम योगी ने की है। मंत्रियों को बताया गया है कि वे क्ध्या कर सकते हैं और क्ध्या नहीं। मंत्रियों से कहा गया है कि वे किसी भी संगठन से पुरस्ध्कार लेने से पहले उसके बारे में पूरी जांच–पड़ताल करें। संस्ध्था ठीक है तो पुरस्ध्कार ले सकते हैं लेकिन इसके साथ कोई धनराशि नहीं ली जानी चाहिए। पुरस्ध्कार देने वाली संस्ध्था के विदेशी होने की स्थिति में सरकार से इजाजत लेनी होगी। विदेश दौर पर मिले प्रतीकात्मक उपहार जैसे सम्मान पत्र, प्रतीक चिह्न या समारोह से जुड़े उपहार मंत्री रख सकेंगे। बाकी ट्रेजरी में जमा करवाने होंगे। हर साल देंगे सम्ध्पत्ति का ब्ध्योराः मुख्ध्यमंत्री योगी आदित्ध्यनाथ ने मंत्रियों से हर साल अपनी, पत्ध्नी की और परिवार के सभी आश्रित सदस्ध्यों की सम्ध्पत्ति की जानकारी सार्वजनिक करने को कहा है। इसके साथ ही उन्ध्होंने मंत्रियों से काम में परिवार का दखल न हाने देने को भी कहा है। यह भी कहा है कि मंत्री या उनके परिवार का सदस्य, सरकार से मिलने वाले लाइसेंस, परमिट, कोटा, पट्टा पर आधारित काम नहीं करेगा। अगर मंत्री बनने के पहले से ऐसा कोई काम चल रहा हो तो उसकी पूरी जानकारी देनी होगी।

लखनऊ–आगरा एक्सप्रेस वे पर भीषण सड़क हादसा, एक ही परिवार के छह लोगों की मौत

उन्नाव (उत्तर प्रदेश)। उन्नाव जिले के बांगरमऊ कोतवाली

क्षेत्र में लखनऊ–आगरा एक्सप्रेस वे पर एक तेज रफ्तार कार के पलट जाने और उसके एक अन्य कार से टकरा जाने से तीन लोगों की मौत हो गयी और छह लोग घायल हो गए। पुलिस सूत्रों ने बृहस्पतिवार को बताया नासिरापुर गांव के पास हवाई पट्टी के निकट बुधवार देर रात एक तेज रफ्तार कार पलट गई और सामने से आ रही एक अन्य कार की उससे टक्कर हो गई। इस हादसे में पवन (23), चिंतन (18) और छह माह की बच्ची की मौत हो गई। हादसे में गंभीर रूप से घायल छह लोगों को जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां से उन्हें लखनऊ रेफर कर दिया गया। अपर पुलिस अधीक्षक शशि शेखर सिंह के अनुसार दुर्घनाग्रस्त हुई कार में राजस्थान के एक ही परिवार के नौ लोग सवार थे जिनमें से तीन की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि पुलिस मामला दर्ज कर जांच कर रही है।

प्रधानमंत्री का संघवाद सहकारी नहीं, बल्कि प्रतिरोधी है, राहुल गांधी का नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला

नयी दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विपक्ष शासित राज्यों से पेट्रोलियम उत्पादों पर वैट कम करने की अपील को लेकर बृहस्पतिवार को उन पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि उनका संघवाद सहकारी नहीं, बल्कि अवरोध ा पैदा करने वाला है। उन्होंने ट्वीट किया, ईंधन की अत्यधिक कीमतों के लिए राज्यों को जिम्मेदार ठहराइये ! कोयले की कमी के लिए राज्यों को जिम्मेदार ठहराइये ! ऑक्सीजन की कमी के लिए राज्यों को जिम्मेदार ठहराइये! ईंधन पर लगने वाले कर का 68 प्रतिशत हिस्सा केंद्र लेता है। इसके बावजूद प्रधानमंत्री जिम्मेदार से पल्ला झाड़ते हैं। राहुल गांधी ने आरोप लगाया, मोदी का संघवाद सहकारी नहीं है। यह प्रतिरोधी है। विपक्ष शासित कई राज्यों में पेट्रोल दृ डीजल की बढ़ती कीमत का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को इन राज्यों से ''राष्ट्र हित'' में पेट्रोलियम उत्पादों से वैट घटा कर आम आदमी को राहत देने तथा वैश्विक संकट के इस दौर में सहकारी संघवाद की भावना के साथ काम करने की अपील की थी।

झारखंड के मंत्री हाफिजुल हसन की धमकी, हमारे 20 घर बंद होंगे तो आपके 80 बंद कर देंगे

झारखंड के मंत्री हाफिजुल हसन ने केंद्र सरकार को श्अल्पसंख्यक के साथ खिलवाड़श के खिलाफ चेतावनी दी है। झारखंड के मंत्री हफिजुल हसन ने खुलेआम धमकी दी है। उन्होंने कहा कि 20 फीसदी को तंग किया तो 80 फीसदी को खत्म कर देंगे। उन्होंने कहा कि हमारे 20 घर बंद होंगे तो आपके 80 घर बंद कर देंगे। मंत्री ने भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार को चेतावनी में कहा कि केंद्र सरकार के द्वारा जो किया जा रहा है। धर्म विशेष के साथ जो हो रहा है उसमें सभी का नुकसान है। अगर हम 20 प्रतिशत हैं तो आप 80 प्रतिशत हैं, 70 प्रतिशत हैं। लेकिन अगर मेरा 20 घर बंद होगा तो आपका 70 घर बंद होगा। ये सभी को समझ में आ गया। भाजपा ने झारखंड के मंत्री का इस्तीफा मांगाः भाजपा ने इस टिप्पणी पर कड़ी आपत्ति जताते

हुए हसन के इस्तीफे की मांग की है। झारखंड भाजपा अध्यक्ष दीपक प्रकाश ने कहा कि यह हेमंत सोरेन सरकार का असली चेहरा है। अगर मुख्यमंत्री में हिम्मत है तो उन्हें मंत्री से इस्तीफा देने के लिए कहना चाहिए। झारखंड के भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने भी हाफिजुल हसन को शहिंदुओं को खुली धमकीश देने के लिए निशाना साधा है। दुबे ने कहा, ष्क्या आपने इस मंत्री को सुपारी दी है? ध ार्मांतरण और सांप्रदायिक नफरत भड़काने का आपका एजेंडा अब खुले में है। हफीज मेरे लोकसभा क्षेत्र से विधायक हैं। अगले चुनाव में मैं उनकी जमानत रद्द करना सुनिश्चित करूंगा। बता दें कि झामुमो नेता हाफिजुल हसन मध ाुपुर से विधायक हैं और वर्तमान में हेमंत सोरेन के मंत्रिमंडल में युवा और खेल मामलों के विभाग के मंत्री हैं। 2014 में, संपत्तियों के संबंध में आपराधिक विश्वासघात के लिए आईपीसी की धारा 409ध 420ध120बी और 177 के तहत उनके खिलाफ मामला दर्ज किया गया था।

पेट्रोल–डीजल पर केंद्र को भी कम करना चाहिए टैक्स, अजीत पवार बोले– CNG से राज्य को हुआ 1000 करोड़ रुपए का नुकसान

मुंबई। पेट्रोल–डीजल की बढ़ी हुई कीमतों की वजह से आम आदमी परेशान हैं। ऐसे में महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार का बयान सामने आया है। जिसमें उन्होंने साफ किया है कि पेट्रोल–डीजल पर पहले केंद्र और फिर राज्यों द्वारा टैक्स लगाया जाता है। ऐसे में केंद्र को भी टैक्स को कम करना चाहिए। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को राज्यों के साथ हुई बैठक में पेट्रोल–डीजल से टैक्स को कम करने अपील की थी। बजट में नहीं बढ़ाया कोई टैक्सः समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक, उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने कहा कि केंद्र की ओर से जीएसटी की बड़ी रकम अभी आनी बाकी है। प्रधानमंत्री मोदी ने कल पेट्रोल–डीजल पर टैक्स कम करने की अपील की,

हमने इस साल बजट में कोई टैक्स नहीं बढ़ाया। हमने सीएनजी पर टैक्स कम किया, जिससे राज्य को 1000 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। उन्होंने कहा कि हम आज कैबिनेट में पेट्रोल–डीजल की कीमतों पर चर्चा कर सकते हैं। कल प्रधानमंत्री मोदी के साथ बैठक में क्या हुआ यह तो मुख्यमंत्री ही बताएंगे। देश में सभी को यह स्वीकार करना होगा कि तेल पर पहले केंद्र और फिर राज्यों द्वारा टैक्स लगाया जाता है, इसलिए केंद्र को भी टैक्स कम करना चाहिए।

इससे पहले शिवसेना सांसद संजय राउत ने प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधा था। उन्होंने कहा था कि मुख्यमंत्रियों को बताया गया था कि प्रधानमंत्री मोदी कोविड पर बैठक करेंगे। पेट्रोल–डीजल को लेकर प्रध ानमंत्री मोदी ने गैर भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों पर निशाना साधा, यह सही नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी से ऐसा करने की उम्मीद नहीं थी लेकिन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे और ममता बनर्जी ने जवाब दिया है।

अघोषित बिजली कटौती को लेकर मचा हाहाकार

इटियाथोक,गोंडा। अघोषित बिजली कटौती को लेकर शहर से गांव तक हाहाकार मच गया है।आसमान से बरसती आग भीषण गर्मी ने लोगों का दिन का चौन व रात का सुकून छीन लिया है।जिसको लेकर लोग काफी परेशान है।कस्बा सहित ग्रामीण अंचलों में विद्युत आपूर्ति पूरी तरह से चौपट हो गई है।सरकार के उस दावे की धज्जियां उड़ रही हैं, जिसमें कहा गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 18 घंटे व शहरी क्षेत्रों में 24 घंटे निर्बाध विद्युत की सप्लाई की जाए। प्रदेश के डिप्टी सीएम बृजेश पाठक के गोंडा दौरे के बाद भी विद्युत आपूर्ति में कोई सुधार नहीं हुआ है।जबकि उन्होंने कहा था, कि रोस्टर के हिसाब से विद्युत आपूर्ति की जाए। वर्तमान समय में बिजली आपूर्ति के लिए ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में क्या रोस्टर है यह किसी को पता नहीं है। बिजली कब आएगी कब जाएगी इसके लिए निर्धारित कोई समय नहीं है। बिजली अपने पुराने ढर्रे पर एक बार फिर पहुंच चुकी है।जनपद के इटियाथोक विद्युत उपकेंद्र का हाल तो बहुत ही बेहाल है। यहां के कर्मचारी आपूर्ति बंद होने पर पावर हाउस के नंबर को स्विच ऑफ कर लेते हैं। यहां तक कि उपभोक्ताओं को कोई समुचित जानकारी भी नहीं मिल पाती है, कि बिजली कब आएगी। बीते एक सप्ताह से आपूर्ति पूरी तरह से चरमरा गई है। दिन के समय बड़ी ही मुश्किल से 3 से 4 घंटे व रात्रि के समय कुल मिलाकर 4 से 5 घंटे आपूर्ति मिल पाती है। रात्रि के समय अघोषित कटौती के कारण इस भीषण गर्मी में लोग बेहाल हैं। दिनभर की भागदौड़ के बाद रात्रि का सुकून भी छिन गया है। यह हाल तब है जब सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में 18 घंटे बाद शहरी क्षेत्रों में 24 घंटे आपूर्ति का ढिंढोरा पीट रही है। लेकिन विद्युत आपूर्ति सिर्फ कागजों पर हो रही है। आपूर्ति के बिगड़े हालात को देखकर कहीं ना कहीं शासन प्रशासन के प्रति भी लोगों में आक्रोश पनप रहा है। इस संबंध में जेई अजय कुमार गुप्ता ने बताया वर्तमान समय में कोई रोस्टर चल ही नहीं पा रहा है। उसके पीछे कारण यह है कि एकाएक गर्मी बढ़ने के कारण डिमांड अधिक हो गई है। जबकि आपूर्ति कम है।

मनकापुर के नरायनपुर ग्रंट में दबंगो द्वारा किया जा रहा अवैध कब्जा,पत्रकार के खबर छापने पर दी गयी धमकी,मनकापुर कोतवाली में दबंग के विरुद्ध दी गई तहरीर

गोण्डा।एक तरफ उत्तर प्रदेश सरकार सरकारी भूमि खलिहान चरागाह पर अवैध कब्जे को बुलडोजर लगा कर खाली करा रही है बुलडोजर लगा कर ध्वस्ती करण किया जा रहा है जिसके लिए तहसील स्तर की टीम गठित कर परगना अधिकारी और तहसीलदार के अगुवाई में अतिक्रमण को हटाया जा रहा है।वहीं दूसरी तरफ मनकापुर तहसील अंतर्गत नारायणपुर ग्रंट गांव में ग्राम समाज की भूमि पर कुछ दबंगों द्वारा अवैध निर्माण कराकर कब्जा किया जा रहा है इस अवैध निर्माण को लेकर स्थानीय पत्रकार सुशीला शुक्ला द्वारा जब खबर प्रकाशित की गई तो दबंग ने पत्रकार को जान से मार डालने की धमकी दे डाली, सुशीला शुक्ला द्वारा इसकी शिकायत मनकापुर कोतवाली में लिखित रूप से की गई है।जिसमें लाले यादव पुत्र सँवारे यादव यादव निवासी नारायणपुर ग्रंट को नामजद करते हुए लाले यादव द्वारा कई दिनों से जान से मार डालने की धमकी की बात कही गयी है। इस संबंध में मनकापुर कोतवाल ने बताया कि तहरीर मिली है और मेरी मैडम से बात भी हुई है मैंने संबंधित एक दरोगा जी को जांच के लिए मौके पर भेजा था लेकिन आरोपी वहां मिला नहीं है।आरोपी के मिलने पर उससे भी पूछताछ की जाएगी और कार्रवाई की जाएगी।कोतवाल ने बताया कि जैसी जानकारी मिली है कि जिस भूमि पर निर्माण की बात कही गई है उसके संबंध में एसडीएम मनकापुर के न्यायालय पर मुकदमा चल रहा है उक्त के संबंध में मैडम द्वारा कोई खबर खबर प्रकाशित की गई है जिसमें धमकी की बात कही जा रही है । कोतवाल ने बताया कि हालांकि मैडम द्वारा ऐसा कोई साक्ष्य अभी नहीं दिया गया है जिसमें वॉइस रिकॉर्डिंग हो या कोई वीडियो रिकॉर्डिंग हो। इस संबंध में आरोपी मिला नहीं है उसके मिलने पर ही आगे कार्य की कार्रवाई की जाएगी प्रयास किया जा रहा है आरोपी शीघ्र ही पुलिस के पकड़ में आ जाएगा। उ0प्र0 श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के जिलाध्यक्ष कैलाश नाथ वर्मा ने कहा दबंग के विरुद्ध पुलिस को कार्यवाई करनी पड़ेगी अन्यथा कोतवाली का घेराव किया जाएगा।

विनोबा के शिक्षा में अप्रतिम योगदान को भुलाया नही जा सकता: प्रो. पी.पी. सिंह

विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन और उसकी प्रासंगिकता विषय पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी

अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त संयोजन में आचार्य विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन और उसकी प्रासंगिकता विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन किया गया। समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए अवध विश्वविद्यालय के प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग के पूर्व निदेशक प्रो0 पी0 पी0 सिंह ने कहा कि विनोबा भावे एक महान संत थे जिन्होंने मानवता के कल्याण के लिए जीवन धारण किया और जीवन पर्यंत मानव की सेवा के लिए तत्पर रहें। प्रो0 सिंह ने बताया कि देश के महान विभूतियों में विनोवा के त्याग एवं समर्पण को भुलाया नहीं जा सकता। भूदान व सर्वोदय आंदोलन के साथ गरीबों एवं असहायों को शिक्षा के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने बताया कि विश्वभर में शिक्षा के अप्रतिम योगदान के लिए विनोबा को जाना जाता है। उन्होंने शिक्षकों को शिक्षार्थी के बीच समन्वय बनाए रखने के लिए कर्तव्यनिष्ठा के साथ कर्तव्य परायणता होनी चाहिए। यदि विद्यार्थी अच्छा होगा तो स्वतः ही शिक्षक की पहचान होगी। इसलिए शिक्षक को अपने विद्यार्थी के प्रति सकारात्मक रवैया रखना चाहिए।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने कहा कि विनोवा का शिक्षा के प्रति एक संकल्प था। उन्होंने शिक्षकों व छात्रों के बीच एक आत्मीयता होने की बात कही थी। यह तभी संभव है जब दोनों के बीच सामंजस्य हो। प्रो0 नीलम ने भावे की शिक्षा पर बोलते हुए कहा कि शिक्षा दो तरह से प्राप्त की जा सकती है। बाहरी शिक्षा में परंपरागत शिक्षा व आंतरिक शिक्षा में अध्यात्मिक। इन दोनों के सामंजस्य से शिक्षक और शिक्षार्थी एक नया आयाम दे सकता है। प्रो0 नीलम ने कहा कि भावे मानते थे कि शिक्षक को छात्रों के बीच प्रेरक की भूमिका में होना चाहिए जिससे छात्रों में एक नई ऊर्जा का संचार कर सकें।

कार्यक्रम में प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभागाध्यक्ष व संगोष्ठी के संयोजक प्रो0 अनूप कुमार ने कहा कि विनोबा भावे ने शिक्षा को एक नई दिशा दी है। इसका लाभ उठाकर देश आगे बढ़ सकता है। उन्होंने बताया कि इस संगोष्ठी में शिक्षा के क्षेत्र में विनोवा के अनछुए पहलुओं को उजागर किया गया है। कार्यक्रम के आरम्भ में अतिथि द्वारा मॉ सरस्वती की प्रतिमा पर मार्ल्यापण करके किया गया। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ, स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्रम भेटकर किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 प्रत्याशा मिश्रा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सह–संयोजक डॉ0 सुरेंद्र मिश्र द्वारा किया गया। संगोष्ठी को सफल बनाने में आयोजन समिति के डॉ0 विनोदिनी वर्मा, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ अभिषेक सिंह, डॉ0 तरूण सिंह गंगवार, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा, इजीनियर अनुराग सिंह, डॉ0 सुधीर सिंह, डॉ0 चन्द्रकांत कैथवास, डॉ0 अंकित मिश्र, श्रिया श्रीवास्तव, शालिनी पाण्डेय, विनीता पटेल, डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, डॉ0 सरिता पाठक, डॉ0 प्रतिभा, डॉ0 चन्द्रशेखर, डॉ0 अरूण चौबे, डॉ0 आनन्द बिहारी, रत्नेश यादव की विशेष भूमिका रही। संगोष्ठी के समापन पर प्रो0 जीआर मिश्र, प्रो0 के0के0 वर्मा, प्रो0 आरके सिंह, अनिल कुमार, डॉ0 प्रदीप केशरवानी, डॉ0 एमजी गुप्ता, डॉ0 रमेश चन्द्र, डॉ0 सोभनाथ यादव, डॉ0 अवध नारायण सिंह, सहित अन्य शिक्षकों एवं प्रतिभागियों की उपस्थित रही।

खेल को बढ़ावा देने के लिये,मंगल दलों को खेल प्रोत्साहन सामाग्री का किया गया वितरण

गोंडा। गांवो में खेल को बढ़ावा शिवदयाल गंज (गोण्डा) ग्राम स्तर पर खेलों को बढ़ावा देने और खेलों के प्रति ग्रामीण अंचल के लोगों की भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल विभाग के द्वारा ब्लॉक मुख्यालय पर विकास खंड में गठित युवक एवं महिला मंगल दलों को खेल प्रोत्साहन सामाग्री का वितरण किया गया। क्षेत्रीय युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल अधिकारी अधिकारी प्रिया यादव, बीडीओ राघवेंद्र सिंह और एडीओ पंचायत रवि प्रकाश मिश्रा ने संयुक्त रूप से खेल प्रोत्साहन सामाग्री का वितरण किया गया। इस मौके पर युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल अधिकारी ने बताया कि ग्राम पंचायतों में गठित युवक और महिला मंगल दलों को खेल प्रोत्साहन सामग्री का वितरण किया गया है जिसमें युवक मंगल दलों को दी गई सामाग्री किट में फुटबाल, वालीबॉल, वालीबॉल नेट, इन्फ्लेटर, स्कपिंग रोप और महिला मंगल दलों को दी गई किट में फुटबाल, वालीबॉल, वालीबॉल नेट, इन्फ्लेटर और चेस्ट एक्सपेंडर शामिल हैं। खेल सामाग्री के साथ–साथ खेलों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां भी मौके पर मौजूद लोगों को दी गईं। इस मौके पर भानु प्रताप सिंह,प्रधान संघ के ब्लॉक अध्यक्ष लाल जी सिंह, नफीस अहमद, ब्लॉक कमांडर बलराम निषाद, राजकुमार, पटेश्वर यादव और पवन कुमार सहित तमाम लोग मौजूद रहे ।

अज्ञात वाहन की टक्कर से घायल युवक की ईलाज के दौरान हुई मौत

गोंडा। क्षेत्र के अकबरपुर गांव के बल्लीपुर सानी मजरे के निवासी विजय कुमार उम्र 25 वर्ष पुत्र राम अवतार शाम कटरा से मोटरसाइकिल से अपने घर वापस लौट रहे थे कि रीवां गांव के पास अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी और फरार हो गया। टक्कर लगने से बाइक सवार विजय गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना मिलने पर पहुंचे परिजनों द्वारा एक निजी चिकित्सक के यहां घायल का इलाज कराने के बाद घर ले आया गया। गांव के प्रधान प्रतिनिधि राजिक उस्मानी ने बताया कि सुबह घायल विजय की तबीयत अचानक बिगड़ गयी और इलाज के लिए ले जाते हुए रास्ते में उसकी मौत हो गई। वहीं इस संबंध में कोल्हमपुर चौकी प्रभारी रविन्द्र कुमार रमन ने बताया कि दुर्घटना की जानकारी मिली है तहरीर मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

तेज रफ्तार ट्रक ने टेंपो में मारी टक्कर। 04 लोग हुए गंभीर रूप से घायल

गोंडा। क्षेत्र महेशपुर गांव के पास गोरखपुर–अयोध्या हाइवे पर सुबह लगभग तेज रफ्तार ट्रक ने आगे जा रहे टेंपो में टक्कर मार दी जिससे कि टेम्पो में सवार 04 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।घायलों का उपचार अयोध्या के श्री राम अस्पताल में चल रहा है जहां इलाज के दौरान सद्दाम उम्र 35 पुत्र समीउल्लाह निवासी हैदराबाद थाना परसुराम पुर जिला बस्ती की मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार 03 अन्य घायल बबली यादव, श्वेता और गुलजन गुप्ता निवासी अयोध्या का इलाज चल रहा है। प्रभारी निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि घटना की जानकारी मिली है तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

विद्युत कटौती की समस्या दूर करने की मांग उठाई

अयोध्या। बिजली समस्या को लेकर सपा जिला अध्यक्ष गंगा सिंह यादव के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल जिलाधिकारी अयोध्या से मिला और जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों तथा खासकर रुदौली कस्बा और रुदौली तहसील के क्षेत्र में हो रही अघोषित कटौती का मामला उठाया। सपा जिला अध्यक्ष गंगा सिंह यादव ने कहा कि इस समय रमजान का पाक महीना चल रहा है गेहूं की मड़ाई का सीजन है ऐसे में भयंकर बिजली की समस्या ने आम जनमानस और रोजेदारों का हाल बेहाल हो गया है सपा जिला अध्यक्ष गंगा सिंह यादव को जिलाधिकारी ने आश्वासन दीया की बिजली समस्या का समाधान शीघ्र कराया जाएगा प्रतिनिधिमंडल में जिला अध्यक्ष गंगा सिंह यादव चौधरी शहरयार सपा जिला प्रवक्ता चौधरी बलराम यादव मोहम्मद आमिर खान नगर अध्यक्ष रुदौली मोहम्मद इदरीश सभासद परवेज खान शोएब खान नदीम खान आदि लोग मैजूद रहे।

ईद को लेकर मस्जिदो व ईदगाहो का एसडीएम ने किया निरीक्षण

साफ–सफाई एवं चूने का छिड़काव कराने का दिया निर्देश

गोसाईगंज–अयोध्या। ईद की नमाज पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश का अनुपालन कराने के लिए एसडीएम सदर राम कुमार शुक्ला ने अपने मातहतों के साथ गोसाईगंज कस्बे के मस्जिदो तथा ईदगाहो का निरीक्षण कर मुस्लिम धर्मगुरूओ से उच्चतम न्यायालय के आदेश का अनुपालन करते हुए ईद की नमाज सड़क पर न पढने का अनुरोध किया।एसडीएम सदर ने कहाकि यदि नमाजियों की संख्या अधिक है तो वे ईद की नमाज2–3 शिफ्टो मे अदा करें।त्यौहार के दिन वे स्वयं गोसाईगंज कस्बे मे मौजूद रहेंगे तथा नमाजियों को कोई परेशानी न हो इसका वे भरपूर प्रयास करेंगे।मुस्लिम धर्मगुरूओ ने एसडीएम सदर को बताया कि अयोध्या अम्बेडकरनगर के मध्य गोसाईगंज कस्बे के पश्चिमी सिरे पर मौजूद ईदगाह मे गोसाईगंज कस्बेवासियो सहित समदा,जमुनीपुर, बेलवारी,पकरेला, अचकवापुर,काजीपुर गाडर सहित अगल बगल दर्जनो गाव के हजारो मुसलमान ईद की नमाज बीते 3–4 दशको से इसी ईदगाह मे पढते चले आ रहे है।लेकिन अब जब उच्चतम न्यायालय का निर्देश है तो इसका हम सभी लोग इसका अनुपालन करते हुए ईद की नमाज दो शिफ्टो में पढेंगे।बताया कि प्रथम शिफ्ट की नमाज गोसाईगंज के इमाम आसिफ एवाद तथा दूसरी शिफ्ट की नमाज सिद्धार्थ नगर के इमाम मौलाना दाऊद मित्तही द्वारा संपन्न कराया जाएगा।इस दौरान ईदगाह कमेटी के सदस्य मुनव्वर कादरी,अकबाल हुसैन,डा0 अमीर हसन अंसारी,महमूद हसन राना,मो0 मुस्तफा, प्रवेज अंसारी,डा0 जुनैद आलम, इश्तियाक अंसारी,तनवीर अरशद राजू, जावेद इत्यादि ने हिंदूओ द्वारा पटरियो पर किये जाने वाले भंडारे का हवाला देते हुए उसी तर्ज पर सड़क की पटरियो पर नमाज अदा करने का अनुरोध किया गया तो एसडीएम सदर राम कुमार शुक्ला ने साफ शब्दों में कहाकि न हम सड़क व उसकी पटरियों पर नमाज अदा करने देंगे और न ही हम हनुमान चालीसा का पाठ करने देंगे। नगर पंचायत गोसाईगंज के जलकल प्रभारी शिवशंकर वर्मा ने बताया कि ईद के दिन चेयरमैन रमेश चन्द्र कसौधन तथा ईओ आलोक मिश्रा के निर्देश पर सफाई कर्मियो को निर्देशित कर मस्जिद, ईदगाहो पर साफ सफाई एवं चूने का छिड़काव कराने का निर्देश दिया जा चुका है।ईद के दिन कस्बेवासियो को सुबह 6 बजे से 10 बजे तक,दोपहर मे 12 बजे से दोपहर 2 बजे तक तथा शाम को 6 बजे से रात साढे 9 बजे तक जलापूर्ति सुनिश्चित कराई जायेगी।

कुमुद तिवारी को गृहमंत्री ने स्वर्ण पदक से किया सम्मानित

गोसाईगंज–अयोध्या। गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय रोहतास बिहार के प्रथम दीक्षांत समारोह में एमएससी नर्सिंग में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अयोध्या की बेटी कुमुद तिवारी को गृह मंत्री अमित शाह ने स्वर्ण पदक व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। गोसाईगंज नगर के रामबली डिग्री कॉलेज से स्नातक बंदन पुर निवासी श्रीनिवास तिवारी की पुत्री कुमुद तिवारी को मिले गोल्ड मेडल पर विद्यालय परिवार ने बधाई दी। दीक्षांत समारोह में बतौर विशिष्ट अतिथि बिहार के राज्यपाल फागू चौहान, केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय, उपमुख्यमंत्री तार किशोर प्रसाद, सांसद मनोज तिवारी मौजूद रहे।

चोरी की बाइक साथ गिरफ्तार

जौनपुर। केराकत कोतवाली पुलिस द्वारा धारा 379 आईपीसी बनाम अज्ञात का सफल अनावरण करते हुये घटना को अंजाम देने वाले अभियुक्त मोहित कश्यप उर्फ निशान गौड़ पुत्र रमेश कश्यप उर्फ धर्मेन्द्र गौड़ निवासी सूचितपुर को चोरी गयी बाइक स्पलेण्डर प्लस के साथ खड़हर डगरा रेलवे क्रासिंग के पास पूर्वान्ह लगभग करीब साढ़े सात बजे गिरफ्तार किया गया । गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार लम्बित मुकदमे में धारा 411 आईपीसी की बढ़ोतरी करते हुये गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया।

चोरी के आईपैड के साथ एक गिरफ्तार

मुंगरा बादशाहपुर,जौनपुर। थाना मुगराबादशाहपुर जौनपुर पुलिस द्वारा थाना जबलपुर में पंजीकृत मु0अ0सं0 148ध्2022 धारा 379 भादवि से सम्बन्धित सामान बीते 17 अप्रैल को ट्रेन से चोरी किये गये आईपैड , एक अदद एडाप्टर मय केबल, चार पासपोर्ट एवं एक आधार कार्ड व एक अदद आईपैड बैग की कीमत करीब 50 हजार रुपये बरामद कर वारंटी अभियुक्त अमित रंजन मौर्य पुत्र रमेश चंद्र मौर्य उम्र 25 वर्ष निवासी ग्राम गोरैयाडीह थाना मुंगरा बादशाहपुर को गिरफ्तार किया गया। इसके विरूद्ध मुंगरा थाने में भी धारा 41ध411 भादवि के तहत मुकदमा दर्ज है। गिरफ्तार करने वाली टीम में सदानन्द राय थानाध्यक्ष , उ0नि0 दिनेश कुमार, हे0का0 विनोद कुमार सिंह, का0 ओमप्रकाश मिश्रा, का0 गया प्रसाद पटेल, का0 रवि प्रकाश यादव,का0 अभिमन्यु यादव शामिल रहे।

अमन–चैन को बिगाड़ने की हुई नाकाम कोशिश

मस्जिद के पास और सड़क पर फेंकी गई आपत्तिजनक वस्तु और कागज

अयोध्या। शहर के शांतिपूर्ण माहौल को बिगाड़ने की कोशिश की गई। हालांकि समाज के संभ्रांत और प्रबुद्ध वर्ग की वजह से हालात बिगड़े नहीं वरन संभल गए। फिलहाल पुलिस ने वारदात को बेहद गंभीरता से लिया है और शिकायत के आधार पर कार्रवाई का मन बना लिया है। आरोपियों की तलाश के लिए टीमें बनाई गई हैं, जांच शुरू हो गई है। प्रकरण नगर कोतवाली क्षेत्र के सम्प्रदाय विशेष के धर्मस्थल से जुड़ा है। वारदात को रात दो बजे अंजाम दिया गया है। पुलिस से की गई शिकायत के अनुसार चार बाइक पर सवार दो– दो अज्ञात लोग मस्जिद के पास सीसीटीवी में देखे गए हैं। आरोप है कि बाइक सवार लोगों ने ही शहर के चौक स्थित धर्मस्थल की सीढ़ी पर पवित्र ग्रंथ खराब हालात में रखा। आपत्तिजनक वस्तु के साथ एक पोस्टर भी मिला है। जिस पर अपशब्द लिखा हुआ है। धर्मस्थल के सचिव की ओर से इस सम्बंध में पुलिस को सूचित किया गया। जांच शुरू होती, इसके पहले ऐसा ही एक और प्रकरण शहर के कश्मीरी मोहल्ला और घोसियाना से भी प्रकाश में आया। शरारती तत्वों ने कश्मीरी मोहल्ला स्थित धर्मस्थल के गेट पर भी कमोवेश ऐसी ही हरकत की थी तो घोसियाना में एक अपशब्द लिखा कागज मिला। अभद्र टिप्पणी, अपशब्द लिखे कागज और पवित्र ग्रंथ के साथ अशोभनीय हरकत से सम्प्रदाय विशेष के लोग नाराज हो गए और एकत्रित हो गए। हालांकि प्रकरण की सूचना पर पुलिस सतर्क हुई और जांच पड़ताल शुरू हो गई। मंडलायुक्त नवदीप रिणवा, परिक्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक कविन्द्र प्रताप सिंह, जिलाधिकारी नितीश कुमार और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलेश कुमार पाण्डेय ने शहर का भ्रमण किया। धर्मस्थलों पर पहुंचकर बातचीत की। शांति और सौहार्द बनाए रखने की अपील की। सचिव की ओर से पूरे प्रकरण का जिक्र करते हुए कोतवाली नगर में तहरीर दी गई। जिसमें कठोर कार्रवाई की मांग की गई है।

मांगों के समर्थन में टैक्सी यूनियन का विरोध प्रदर्शन

अयोध्या। रामनगरी के अंदर टैक्सी संचालन रोकने और विभिन्न मांगों को लेकर नेशनल टैक्सी यूनियन के लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। नेशनल टैक्सी यूनियन के अध्यक्ष अशोक कुमार के नेतृत्व में दर्जनों टैक्सी चालकों ने नया घाट तिराहे पर टैक्सी को रोड के किनारे खड़ा कर विरोध प्रदर्शन किया। इन सभी का आरोप है कि श्री राम हॉस्पिटल से नया घाट तक हम सभी टैक्सी वालों को रोक दिया गया है। जिसका हम सभी लोग विरोध कर रहे है। विरोध प्रदर्शन से नागरिकों एवं यात्रियों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। टैक्सी चालकों का कहना है कि हम सभी उचित किराया लेते हैं और रोड को भी जाम नहीं करते लेकिन अयोध्या सीओ उनकी बात नहीं माने। सीओ का कहना है कि सभी टैक्सी वाले अक्सर जाम लगा देते हैं जिससे आवागमन बाधित होता है। टैक्सी यूनियन के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता अपनी मांगों को लेकर एक ज्ञापन भी सौंपा है। टैक्सी चालकों का आरोप है जब कोई मेला होता है तो टैक्सी वालों का प्रवेश वर्जित हो जाता है। इस विरोध प्रदर्शन में संतलाल पाल, मनोज प्रजापति, सत्य प्रकाश मोहित, रक्षा राम यादव, सुनील पाल, जयप्रकाश गुप्ता, रविकांत शंकर समेत अन्य दर्जनों की संख्या में यूनियन के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी शामिल रहे ।

धार्मिक स्थलों से अवैध लाउडस्पीकर हटाए जाने की कार्यवाई तेज

गोंडा। धार्मिक स्थलों से अवैध लाउडस्पीकर हटाए जाने के शासन के आदेश के बाद पुलिस प्रशासन सक्रिय हो गया। कोतवाली करनैलगंज क्षेत्र में मंदिर और मस्जिद पर लगे लाउडस्पीकर उतारे गए। पुलिस की मौजूदगी में यह कार्रवाई की गई। करनैलगंज में सीओ मुन्ना उपाध्याय की अगुवाई में प्रभारी निरीक्षक प्रदीप कुमार सिंह, नगर चौकी प्रभारी दिवाकर मिश्र ने कोतवाली करनैलगंज क्षेत्र के धर्म गुरुओं, प्रबुद्ध जनों संग बैठक कर कोर्ट के आदेश का अनुपालन करने की अपील की। उसके बाद नगर में स्थित सभी मस्जिदों एंव मंदिर पर अवैध रूप से लगाए गए लाउडस्पीकर को हटवाया गया। कोतवाल प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि लाउडस्पीकर उतरवाने के बाद अगर कोई अपने धार्मिक स्थानों पर फिर से लाउडस्पीकर चोरी से बांध लेता है तो उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

पेंटर को लगा करंट, गम्भीर रूप से झुलसा

अयोध्या। कोतवाली नगर अंतर्गत चौकी रामनगर क्षेत्र में आने वाला घोसियाना में पेंटिंग करने दौरान करंट की चपेट में आया पेंटर गम्भीर रूप से झुलस गया। 90 प्रतिशत झुलस जाने के चलते हालत गंभीर देखकर जिला अस्पताल के डॉक्टरों ने केजीएमसी लखनऊ रेफर कर दिया। 32 वर्षीय पेंटर राजेश यादव पुत्र रामकिशोर यादव कादीपुर थाना पुरा कलंदर का रहने वाला है। पेंटिंग का कार्य घोसियाना मोहल्ले में कर रहा था। बताया जा रहा है कि ऊपर से जा रहा बिजली तार छू जाने के कारण झुलस गया। साथ काम कर रहे मुकेश मौर्य निवासी मलिकपुर थाना पुरा कलंदर जिला चिकित्सालय लेकर आया जहां इमरजेंसी ड्यूटी कर रहे डॉक्टर द्वारा हालत गंभीर देखते हुए राजेश यादव को लखनऊ रेफर कर दिया है। चिकित्सक के अनुसार उक्त युवक 90 फीसदी झुलस गया है।

शोहरतगढ़ क्षेत्र में विद्युत व्यवस्था बदहाल, भीषण गर्मी में जनता बेहाल

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। बिजली कटौती बंद करने को लेकर प्रदेश सरकार भले ही सख्त हो लेकिन इसका रत्ती भर असर विभागीय अफसरों पर नहीं पड़ रहा है। अप्रैल की उमस भरी गर्मी में लड़खड़ाई बिजली व्यवस्था गुजरते वक्त के साथ बेपटरी होती जा रही है। नगर पंचायत शोहरतगढ़ एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उपभोक्ताओं की दिनचर्या भी गड़बड़ा गई है। चहुंओर बिजली को लेकर हायतौबा मची हुई है। बिजली कटौती से दिन का चौन व रात की नींद हराम हो गई है। प्रशासन के लोग व्यवस्था पर चुप्पी साधे हुए हैं,समस्या दिन प्रतिदिन नासूर बनती जा रही है। पखवारे भर से शोहरतगढ़ क्षेत्र की बदहाल हुई बिजली व्यवस्था वर्तमान में पटरी से पूरी तरह से उतर चुकी है। दिन और रात मिलाकर बमुश्किल आठ से 10 घंटे की ही बिजली सप्लाई उपभोक्ताओं को मिल पा रही है। सबसे ज्यादा कटौती रात के वक्त में हो रही है। दिन की बिजली कटौती तो लोग झेल ले रहे हैं लेकिन रात की कटौती में वक्त बिताना मुश्किल हो जा रहा है। साधन संपन्न लोग तो जेनरेटर से अपना काम चला ले रहे हैं लेकिन मध्यम वर्ग के लोग व्यवस्था की खामी से उबलते रहते हैं। इलाके में बिजली का जारी रोस्टर मजाक बनकर रह गया है। विभाग के जिम्मेदार मनमर्जी से आपूर्ति दे रहे हैं। ग्रामीणों अंचलों का तो और हाल बेहाल है। अव्यवस्था पर न तो प्रशासन ध्यान दे रहा है और न ही इलाके के जनप्रतिनिधि ही कुछ कर रहे हैं।

शोहरतगढ क्षेत्र के अरमान अंसारी, निलेश चौधरी, चंदन पांडे, सलमान इदरीसी, अमन वर्मा, अभिषेक, सूरज, सोनू, नौशाद अलाम, कलाम, सर्वजीत, वकार मोईज खान, मुकेश, रजा खान, इरशाद खान, आरिफ खान आदि ने डीएम से बिजली व्यवस्था में सुधार कराने की मांग की है।

तेज धूप व गर्मी वैसे ही परेशान किए हुए है– अभय प्रताप सिंह

बिजली कटौती, फाल्ट की समस्या को लेकर जिम्मेदारों का रवैया चितनीय है: वकार मोईज खान

जर्जर तार और ओवरलोड समस्या से आपूर्ति बाधित रहती है: सन्तोष पासवान

विद्युत कटौती की समस्या पर उच्चाधिकारियों को ध्यान देना चाहिए: अजय चौधरी

विप्र समाज की बैठक परशुराम वाटिका संचालन समिति के तत्वावधान में आयोजित

परशुराम जयंती व विप्र समाज के उत्थान व मजबूती पर होगी चर्चा

दैनिक बुद्ध का संदेश

भनवापुर/सिद्धार्थनगर। वृहस्पतिवार को डुमरियागंज डाक बंगले पर विप्र समाज की एक बैठक आयोजित की गई है जिसका संचालन परशुराम वाटिका संचालन समिति द्वारा किया जाएगा। बैठक का मुख्य उद्देश्य आगामी 3 मई को भगवान परशुराम की जयंती व विप्र समाज के उत्थान व मजबूती प्रदान करना होगा। यह बैठक डुमरियागंज राप्ती नदी तट के छठ स्थल पर भव्य व विशाल बैठक होगी जो विगत तीन वर्षों से आयोजित होती आ रही है। बैठक में मुख्यरूप से जनसंख्या नियंत्रण कानून पर चर्चा व इसे पारित करवाने पर पूर्ण बल दिया जाएगा। इसके पश्चात सनातनी समाज के हितार्थ हवन, अनुष्ठान आदि का कार्यक्रम करवाकर उनके सुख–शान्ति व समृद्धि हेतु विप्रों को एक सूत्र में बांधने व बधने पर बल दिया जाएगा जिससे आने वाले समय मे विप्र समाज को मजबूत व समृद्धिशाली बनाया जा सके। बैठक के माध्यम से सरकार द्वारा यह मांग भी किया जाएगा कि हमारी सनातन संस्कृति व देव भाषा संस्कृत को विद्यालयों अनिवार्य किया जाए। ऐसे बैठकों के माध्यम से ब्राह्मण समाज द्वारा समाजहित में किये गए श्रेष्ठ कार्यों के लिए उन्हें सम्मानित भी किया जाएगा। बैठक की अध्यक्षता भनवापुर ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि ा पंडित लवकुश ओझा द्वारा किया गया जिसमें प्रधान संघ अध्यक्ष भनवापुर पंडित लालजी शुक्ल, प्रधान संघ अध्यक्ष डुमरियागंज पंडित सुनील पाठक, अमित मिश्र, महेश्वर पाण्डेय, अनुपम पांडेय, अमरेन्द्र तिवारी उर्फ दीप तिवारी, अजीत कुमार उपाध्याय, सुभाष मिश्र, दिलीप पाण्डेय उर्फ छोटे, बृजेश कुमार शुक्ल, रवि पांडेय, सन्दीप पाण्डेय, राकेश द्विवेदी, वृजनन्दन शुक्ल, रविन्द्र चौबे, आचार्य संकटा प्रसाद शुक्ल, शत्रुघ्न मिश्र, रिसू सिंह, राज मिश्र आदि बुद्धिनिवियों की उपस्थिति रही।

भारतीय खाद्य निगम ने मनाया आजादी का अमृत महोत्सव

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत युसुफपुर स्थित भारतीय खाद्य निगम पीईजी कार्यालय में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भारतीय खाद्य निगम द्वारा गोदामों की स्थिति, उनकी कार्यप्रणाली और एफसीआई द्वारा उपयोग में ली जा रही सर्वोत्तम योजनाओं के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की गई। कार्यक्रम में जिला पंचायत क्षेत्र संख्या एक के जिला पंचायत सदस्य सबलू साहनी बतौर मुख्य अतिथि के रूप मे मौजूद रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला पंचायत सदस्य सबलू साहनी ने कहा कि देश के अनाज भंडारण में एफसीआई का महत्वपूर्ण रोल है। किसानों की फसलों की खरीद और उसका उचित रखरखाव करने के साथ ही उसका समूचित रूप से वितरण करने में एफसीआई महत्वपूर्ण कड़ी है। कोरोना काल में एफसीआई के कर्मचारियों और श्रमिकों ने अपनी कर्तव्य निष्ठ को दिखाते हुए जरूरतमंदों को अनाज वितरण कर अपनी राष्ट्रीय भूमिका निभाई। एफसीआई ने व्यापारी, किसानों के साथ एक मजबूत कड़ी का काम करते हुए अनाज के खरीद और भंडारण प्रणाली को सुदृढ़ बनाने का काम किया है। प्रधान रमेश चन्द्र यादव ने कहा कि फसलों की खरीद व वितरण प्रणाली में खरीद में एफसीआई की भूमिका सराहनीय रही है। एफसीआई ने अपने गोदामों का रखरखाव भी अच्छे तरीके से किया है और पारदर्शिता दिखाई है। गोदाम प्रभारी अखिलेश श्रीवास्तव ने कहा कि एफसीआई डिजीटल प्रणाली की ओर आगे बढ़ी है। किसानों के तोल और अनाज की नमी के लिए डिजीटल प्रणाली अपनाई गई है, जिससे अनावश्यक विवाद दूर हो गए है। किसानों के बैंक खातों में एफसीआई ने खरीद का पैसा सीधा दिया है, जिससे पारदर्शिता बढ़ी है। इस अवसर पर प्रबन्धक भंडारण राकेश कुमार सिंह ने विभाग की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी और कहा कि एफसीआई के सभी गोदाम वैज्ञानिक दृष्टि से बनाए गए हैं। उचित ऊंचाई से कतरने वाले जानवरों से रक्षा तथा ऊंचे पक्के फर्श उपलब्ध कराए गए। भंडारण व्यवहार की वैज्ञानिक संहिता को अपनाते हुए अनाजों का भंडारण किया जाता है। उन्होंने कहा कि अनाजों को जमीन की नमी से बचाने के लिए लकड़ी के टुकड़े तथा पॉलीथीन शीट उपयोग में लाए गए है। डिपो इंचार्ज आर एन यादव ने विभागीय उपलब्धियों का जिक्र करते कोविड के दौरान नई चुनौतियों के बावजूद भी अनाज वितरण में निरंतरता जारी रही थी। एफसीआई द्वारा फोर्टिफाइड राइस वितरित किया जा रहा है जो एनीमिया और कुपोषण को दूर करने में कारगर है। इस दौरान अर्जुन चौधरी, कमलेश, मनोज सहित भारी संख्या लोग मौजूद रहे।

पानी सप्लाई का समय बढ़ाने की उठी मांग

दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका/सिद्धार्थनगर। नगर पंचायत उसका बाजार में पानी सप्लाई का समय बढ़ाने की उठाई मांग वही दीपक सैनी और धर्मेंद्र चौरसिया ने पानी सप्लाई का समय बढ़ाने की मांग उठाई है इनका कहना है कि पानी की सप्लाई का समय बढ़ाया जाय इतनी तेज गर्मी में पानी की ज्यादा आवश्यकता है पानी सप्लाई सुबह 6 बजे से 7 बजे तक रहती है उसके बाद दोपहर में 12 बजे से 12.30 बजे तक, शाम 5 बजे से 5.30बजे तक होने से लोगो को काफी समस्याएं हो रही है मांग उठी है की पानी का सप्लाई का समय 1 घंटे और बढ़ा दिया जाय सुबह 6 बजे से 8 बजे तक किया जाय दोपहर में 12बजे से 1.30 बजे और शाम में 5 बजे से 6 बजे तक बढ़ाया जाय गर्मी में लोगो को ज्यादा सुविधा मिलेगी।

चोरी करने वाले अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका/सिद्धार्थनगर। थाना क्षेत्र उसका बाजार के ग्राम

पंचायत सोहास खास के जामियाउदूह स्कूल में दिन बुधवार को चोरों ने कुछ इलेक्ट्रिक समान चोरी कर ली स्कूल के प्रबंधक अब्दुल रहमान ने थाने पर तहरीर भी दिए और वही एक वीडियो के माध्यम भी देखा गया था जिसको पुलिस ने तीन चोर को गिरफ्तार भी कर लिया चोरों के पास से एक छत का पंखा, एक पंखे का पाइप, एक यूपीएस, एक मोटर का पाइप भी बरामद किया गया है। थाना अध्यक्ष सूर्यभान सिंह ने जानकारी देते हुए कहे कि चोरों को गिरफ्तार कर लिया गया है और उक्त धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर जेल भेज दिया गया है।

बाढ को लेकर जिलाधिकारी ने शुरू की तैयारियां

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। बाढ़ के संबध में तैयारी बैठक जिलाधिकारी

संजीव रंजन की अध्यक्षता एवं अपर जिलाधिकारी (वि0ध्रा0) उमाशंकर की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक संपन्न हुई। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने बाढ़ की तैयारी बैठक की अध्यक्षता करते हुए सिचाई निर्माण खण्ड तथा ड्रेनेज खण्ड के सभी अभियन्ताओं को निर्देशित किया कि बाढ़ से संबधित समस्त तैयारियां पूर्ण कर ली जाये, अति संवेदनशील बंधो का निरीक्षण कर रैन कट, रैट होल, गैप आदि समय से भर ले, कोई भी कार्य किसी भी दशा में अवशेष नही रहना चाहिए। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने अपर जिलाधिकारी (वि0ध्रा0) उमाशंकर को निर्देश दिया कि जनपद में बाढ़ में मैरूण्ड ग्रामों की सूची तैयार कर उपलब्धा कराये। जिलाधिकारी ने जिला पंचायत राज अधिकारी को बाढ़ से प्रभावित होने वाले ग्रामों में हैण्ड पम्पों का उच्चीकरण करने का निर्देश दिया गया। इसके साथ ही बाढ़ से बचाव हेतु ग्रामवासियों का प्रशिक्षण कराने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी को निर्देश दिया कि अपने क्षेत्र में भ्रमण कर तटबन्ध का निरीक्षण कर ले तथा नाव की मरम्मत भी करा ले। जिलाधिकारी ने जिला पूर्ति अधिकारी तथा मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिया कि खाद्यान्न तथा भूसा चारा आदि का टेण्डर समय से करवा ले। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त अपर पुलिस अधीक्षक सुरेश चन्द्र रावत, उपजिलाधिकारी नौगढ़ विकास कश्यप, उपजिलाधिकारी डुमरियागंज प्रदीप कुमार, बांसी प्रमोद कुमार, इटवा अभिषेक पाठक,शोहरगढ़ उत्कर्ष श्रीवास्तव, जिला पूर्ति अधिकारी बृजेश मिश्र, जिला पंचायत राज अधिकारी आदर्श, तथा अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

जिला स्तरीय उद्योग बन्धु, व्यापार मण्डल की बैठक सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जिला स्तरीय उद्योग बन्धुध्व्यापार मण्डल की बैठक जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी संजीव रजन द्वारा पिछली बैठक की कार्यवृत्ति के की समीक्षा की गयी। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने व्यापारियों की समस्याओं को सुना तथा सम्बन्धित अधिकारियों को उसके निस्तारण हेतु निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने लीड बैक अधिकारी को निर्देश दिया कि व्यापारियों के जो भी लोन के प्रकरण है उन्हें निस्तारित कराया जाये तथा व्यापारियों को परेशान न करें।

जिलाधिकारी ने उपायुक्त उद्योग को निर्देश दिया कि भारत सरकारध्प्रदेश सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओ की जानकारी व्यापारियों को दी जाये तथा शासन द्वारा दिये गये लक्ष्य को समय से पूर्ण कराने का निर्देश दिया।

जिलाधिकारी संजीव रंजन ने उपायुक्त उद्योग को व्यापारियों की शिकायतो को रजिस्टर में अंकन करने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने उपायुक्त उद्योग को निर्देश दिया कि इस बैठक में व्यापारियों द्वारा की गयी शिकायतो का निराकरण करने के लिए संबधित अधिकारियों को प्रेषित कर आख्या उपलब्ध कराये। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त क्षेत्राधिकारी नौगढ़, अधिशासी अभियन्ता विद्युत, उपायुक्त उद्योग दयाशंकर सरोज, प्र0 जिला समाज कल्याण अधिकारी एजाजुल हक खान, जिला श्रम प्रर्वतन अधिकारी लीलाधर, मुख्य प्रबन्धक भारतीय स्टेट बैंक, शाखा प्रबन्धक नौगढ़ तथा व्यापारियों आदि की उपस्थिति रही।

कृषि कर्मचारी घर घर जाकर किसानों को कर रहे है जागरूक

दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका/सिद्धार्थनगर। कृषि कर्मचारी घर घर जाकर किसानों को जागरूक करने का काम कर रहे है कृषि विभाग का सबसे

ज्यादा केवाईसी और ग्राम पंचायत दुमदुमवा में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में जागरूक करते हुए केवाईसी के बारे में बताते हुए कहा गया कि किसान ज्यादा से ज्यादा केवाईसी करा ले जिससे किसानों को आसानी से लाभ मिल सके कोई भी किसान केवाईसी से वंचित न रह जाए एटीएम मोहित सिंह ने किसानों को किस प्रकार से खेती करनी चाहिए इसके बारे में भी जानकारी दिया गया किसान बहुत सही से समझ रहे है और कृषि विभाग के तरीके से खेती करने के लिए भी कही खेत में ज्यादा जैविक खेती डाले और स्वस्थ रहे।

रैबीज इंजेक्शन न होने चली गई 14 वर्षीय किशोरी की जान

दैनिक बुद्ध का संदेश

कोल्हुईध्महराजगंज। कोल्हुई थाना क्षेत्र के परसौना निवासी एक परिवार पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है। इस परिवार की एक 14 साल की किशोरी की मौत कुत्ता काटने से हो गई है। परिजनों का कहना है कि पहला डोज रैबीज इंजेक्शन लगा, लेकिन दूसरा डोज लगवाने के लिए तीन अस्पतालों का चक्कर लगाया गया। फिर भी इंजेक्शन नहीं लगा। इस बीच झाड़फूंक का सहारा लिया लेकिन हालत बिगड़ती गई और अंततरू किशोरी की जान नहीं बची। पुरी जानकारी के लिए बताते चले की परसौना निवासी जोखू प्रसाद का कहना है कि उसकी 14 साल की बेटी आशा को बीते 15 अप्रैल को कुत्ते ने काट लिया था। रैबीज इंजेक्शन लगवाने के लिए 18 अप्रैल को वह लक्ष्मीपुर सीएचसी पहुंचा और उसको पहला डोज लग भी गया। दूसरे डोज के लिए 21 अप्रैल को बुलाया गया। जोखू के अनुसार 21 को जब वह पहुंचा तो बताया गया कि यहां रैबीज का इंजेक्शन खत्म हो गया है। उसे बहदुरी पीएचसी भेजा गया, लेकिन वहां भी इंजेक्शन न होने की बात कहकर बृजमनगंज सीएचसी भेजा गया। जोखू के अनुसार वह बृजमनगंज पहुंचा तो वहां स्वास्थ्य मेला लगा था। उसे अगले दिन आने को कहा गया। इसके बाद वह अपनी बेटी को लेकर घर चला आया और झाड़फूंक कराया। बताया कि बुधवार को उसकी बेटी की तबीयत अचानक बिगड़ गई। वह सीएचसी बनकटी पहुंचा तो वहां से उसे मेडिकल कालेज गोरखपुर रेफर कर दिया गया। मेडिकल कालेज पहुंचने पर उसकी हालत देख उसे बहुत गंभीर बताया गया। थक–हारकर वह उसे लेकर घर चला आया और देर रात उसकी मौत हो गई। इस सम्बन्ध ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अजय चौबे ने बताया की स्वास्थ्य विभाग के लापरवाही से किशोरी की मौत हुई है स्वास्थ्य विभाग पर जिला प्रशासन कार्यवाही करे नही तो हम सब ग्रामीणों के साथ मिलकर चक्का जाम करेंगे।

सम्पादकीय

मै भविष्यवाणी कर दे रहा हूं कि भारत की राजनीति, राष्ट्र–राज्य व शासन की तासीर अब सौ टका बुलडोजर की आत्मा प्राप्त कर चुकी है। भविष्य में हर नेता बुलडोजर मॉडल के उपयोग से वोट पकाएंगा और राज करेगा। हिंदुओं को उनके शासन के असली मश्वडल का वरदान मिल गया है। सोचे ...

अब कठघरे में अमेरिका है

असल सवाल अमेरिका के रुख पर है। अमेरिका दुनिया में अपना नैतिक बल लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की वकालत करते हुए हासिल करता है। तो जुलियन असांज के मामले में वे मूल्य लागू करने से वह क्यों इनकार करता रहा है? आखिर असांज ने जो किया, वह पत्रकारिता ही है। ब्रिटेन की एक अदालत ने बीते हफ्ते जूलियान असांज को अमेरिका भेजन के लिए हरी झंडी दे दी। इस तरह अब अंतिम फैसला ब्रिटिश सरकार को लेना है। ब्रिटिश सरकार के रुख को देखते हुए यह नहीं लगता कि वह असांज के समर्थन में खड़ी होगी। बहरहाल, उसने अगर प्रतिकूल फैसला किया, तो उसके बाद भी असांज के पास उसके बाद भी अपील के कई रास्ते उपलब्ध होंगे। लेकिन असल सवाल अमेरिका के रुख पर है। अमेरिका दुनिया में अपना नैतिक बल लोकतंत्र, मानव अधिकारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की वकालत करते हुए हासिल करता है। प्रश्न यह है कि जुलियन असांज के मामले में वे मूल्य लागू करने से वह क्यों इनकार करता रहा है? आखिर असांज ने जो किया, वह पत्रकारिता की परिभाषा के तहत ही आता है। कहीं भी पत्रकार अगर किसी रहस्य से परदा हटाता है, तो उससे किसी ना किसी ताकतवर व्यक्ति या संस्था या देश के लिए असहज स्थिति बनती है। असांज ने जो खुलासे किए, उससे बहुत से दूसरे देशों के साथ–साथ अमेरिका के लिए भी असहज स्थिति बनी। लेकिन ऐसे हाल में किसी लोकतंत्र समर्थक का क्या कर्तव्य होगा? क्या उसे पत्रकार के सच सामने लाने के अधिकार के समर्थन में खड़ा नहीं होना चाहिए? अमेरिका ऐसा ना करके क्या यह संकेत नहीं देता है कि स्वतंत्रता की उसकी वकालत एक पाखंड है? अमेरिका ने लगातार असांज के प्रत्यर्पण की मांग की है, ताकि वह उन पर जासूसी के आरोपों के तहत 17 मामलों और कंप्यूटर के दुरुपयोग के आरोप के तहत एक मामले में मुकदमा चला सके। अमेरिका का कहना है कि असांज ने ने गैरकानूनी तरह से गोपनीय कूटनीतिक केबल और सैन्य फाइलें चुराने में अमेरिकी सेना के इंटेलिजेंस ऐनालिस्ट चेल्सी मैनिंग की मदद की। इन केबलों और फाइलों को बाद में असांज वेबसाइट विकीलीक्स ने छाप दिया था। असांज के समर्थकों और उनके वकीलों का कहना है कि उन्होंने एक पत्रकार की तरह काम किया। इसलिए उनकी अभिव्यक्ति की आजादी को संरक्षण मिलना चाहिए। असांज ने ऐसे दस्तावेज छापे थे जिन्होंने इराक और अफगानिस्तान में अमेरिका के दुराचार को उजागर किया। ऐसे में असांज के वकीलों की ये दलील वाजिब लगती है कि असांज प्रस्तावित मामले राजनीति से प्रेरित हैं। असांज अगर अमेरिका में दोषी पाए गए, तो उन्हें 175 साल तक की कारावास की सजा सुनाई जा सकती है।

नए भारत का कायदा

सोमवार को अदालत ने उन्हें जमानत देने का फैसला किया। लेकिन उससे मेवाणी को राहत नहीं मिली। क्योंकि वे जैसे ही कोर्ट से बाहर आए, एक महिला पुलिसकर्मी से दुर्व्यवहार करने के एक नए मामले में उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिय गया। इस मामले में उन्हें कब रिहाई मिलेगी, कोई नहीं जानता।

भारत में किसी ट्विट के लिए गिरफ्तार हो जाना अब कोई असामान्य बात नहीं है। जहां एक कॉमेडियन इस संदेह में गिरफ्तार होकर महीनों जेल में गुजार चुका हो कि वह बहुसंख्यक समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला कोई व्यंग्य सुना सकता है, वहां प्रधानमंत्री के बारे में ट्विट करने पर गुजरात के कांग्रेस समर्थित निर्दलीय विधायक जिग्नेस मेवाणी जेल चले गए, तो उसमें कोई हैरत की बात नहीं है। अगर आज की सरकार ने मन बनाया कि मेवाणी को जेल भेजना है, तो फिर उससे बचने का शायद उनके पास कोई चारा नहीं बचता। तो असम की पुलिस ने गुजरात आकर उन्हें हिरासत में लिया और अपने राज्य ले गई। गौर कीजिए। वहां के न्यायालय को यह जरूरत महसूस हुई कि ट्विट की जांच–पड़ताल के लिए मेवाणी को तीन दिन के पुलिस रिमांड में भेजा जाए। उसके बाद उनकी जमानत पर अर्जी पर फैसला सुरक्षित कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया। सोमवार को अदालत ने उन्हें जमानत देने का फैसला किया। लेकिन उससे मेवाणी को राहत नहीं मिली। क्योंकि वे जैसे ही कोर्ट से बाहर आए, एक महिला पुलिसकर्मी से दुर्व्यवहार करने के एक नए मामले में उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया।

इस मामले में उन्हें कब रिहाई मिलेगी, कोई नहीं जानता। फिलहाल, वे इस पर अपनी खैर मना सकते हैं कि अब तक उन पर यूएपीए (गैर–कानूनी गतिविधि ा निवारक कानून) और राजद्रोह कानून के तहत धाराएं नहीं लगाई गई हैं। लेकिन वे इस बारे में आश्वस्त नहीं हो सकते कि भविष्य में भी ऐसा नहीं होगा। असल सवाल उनके कथित जुर्म का नहीं है। असल सवाल यह है कि आज देश का यही कायदा है। सत्ताधारी अगर खफा हो जाएं, तो फिर किसी की खैर नहीं है। पी चिदंबरम से लेकर भीमा कोरेगांव और सीएए विरोधी कार्यकर्ताओं तक को इस बात का अहसास हो चुका है। जब किसी समाज में रूल ऑफ लॉ (कानून के राज) का यह हाल हो जाए, तो वहां का लोकतंत्र किस दर्जे का है, इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। जहां भाजपा नेता (महाराष्ट्र के एक नेता का बयान चर्चित हुआ था) खुलेआम कहते हों कि सत्ताधारी पार्टी में रहने पर अच्छी नींद आती है, क्योंकि किसी सरकारी एजेंसी के दस्तक देने का डर नहीं रहता, वहां समझा जा सकता है कि कानून किस रूप में काम कर रहा है– अथवा कानून का कैसा इस्तेमाल हो रहा है।

सरकार की आधी-अधूरी पहल

पेट्रोल और डीजल पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क से सरकार 26 लाख करोड़ रुपये कमा चुकी है, लेकिन इसके बावजूद राज्यों को जीएसटी का बकाया नहीं दे रही, ये आरोप अब विपक्षी दल केंद्र सरकार पर लगा रहे हैं। भाजपा बनाम विपक्ष की इस लड़ाई में किसका पलड़ा भारी रहेगा, ये तो कहा नहीं जा सकता। मगर आम जनता के लिए राहत की कहीं कोई किरण नहीं दिख रही है। उसे महंगा पेट्रोल–डीजल भी ...

देश में कोरोना की तीसरी लहर अपने मामूली असर के साथ बीत गई, लेकिन अब चौथी लहर का खतरा तेजी से मंडरा रहा है। पिछले कुछ दिनों से कोरोना के मामले बढ़ने की खबर आ रही है। हालांकि हालात दूसरी लहर जैसे घातक नहीं हैं, न ही अब अस्पतालों के बाहर इलाज के लिए मारामारी की नौबत है। पिछले साल लगभग इसी वक्त देश ने जीता–जागता नर्क भुगत लिया है। यह तो आम आदमी की अपनी संघर्ष क्षमता और इच्छा शक्ति थी कि देश उस कठिन दौर को पार करके निकल आया है। क्योंकि सरकार ने तो उस वक्त हाथ खड़े ही कर दिए थे। तब एक दिन नहीं बीतता था जब कहीं न कहीं से सरकारी स्तर पर कुप्रबंधन या लापरवाही की खबरें न आती रही हों। आम जनता ही नहीं, बहुत से खास लोगों ने भी सरकार की अदूरदर्शिता और हालात संभालने में अक्षमता को लेकर सवाल खड़े किए थे। लेकिन भाजपा सरकार ने फिर भी ईमानदारी से जिम्मेदारी निभाने का जज्बा नहीं दिखाया, बल्कि अपनी नाकामी पर लीपापोती करने में ही ढेर सारी ऊर्जा खर्च कर दी। न कभी मौत के सही आंकड़े सामने आए न उन मौतों के सही कारण का खुलासा हुआ। बहरहाल, उस दौर के जख्म आज भी बहुत से लोगों के लिए आज भी भरे नहीं हैं। इसलिए जब तीसरी लहर आई, तब भी डर का थोड़ा माहौल बना और अब चौथी लहर को लेकर भी घबराहट दिख रही है। अच्छा है कि इस बार केंद्र सरकार ने समय पर कदम उठाने की कवायद शुरु कर दी है। लॉकडाउन जैसे मुश्किल फैसले तो सरकार अब लेगी नहीं, क्योंकि इससे अर्थव्यवस्था इस तरह टूट चुकी है, जो न जाने कब संभलेगी। सरकार इस बात को खुलकर स्वीकार नहीं कर रही है कि लॉकडाउन के कारण देश में महंगाई, बेरोजगारी और गरीबी सब में इजाफा हुआ है। लेकिन दोबारा इस तरह के फैसले लागू करने से बचना इस बात की पुष्टि करता है कि सरकार को कहीं न कहीं अपनी गलती का अहसास है। बहरहाल, देश में चौथी लहर के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए देश में कोविड–19 की स्थिति पर राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ समीक्षा बैठक की। प्रधानमंत्री ने इस बैठक में कहा कि स्पष्ट है कि कोरोना की चुनौती अभी पूरी तरह टली नहीं है। उन्होंने कहा कि बीते 2 वर्षों में कोरोना को लेकर ये हमारी 24वीं बैठक है। कोरोना काल में जिस तरह केंद्र और राज्यों ने मिलकर काम किया है और जिन्होंने कोरोना के खिलाफ देश की लड़ाई में अहम भूमिका निभाई है, मैं सभी कोरोना वॉरियर्स की प्रशंसा करता हूं। पिछले 2 हफ्तों से मामले जो बढ़ रहे है, उससे हमें सावधान रहना है। इसके आगे श्री मोदी ने टीकाकरण, अस्पतालों में स्वास्थ्य सुविधाएं और कोरोना से बचाव के लिए अपनाए जा रहे उपायों पर चर्चा की। देश मुश्किल घड़ी में एकजुट होकर खड़ा है, राजनैतिक हितों से परे होकर प्रधानमंत्री सभी राज्यों के साथ संकट से निपटने की चर्चा कर रहे हैं, अभी यह भरम बन ही रहा था कि प्रधानमंत्री ने पेट्रोल–डीजल की महंगी दरों की बात करते हुए गैरभाजपा शासित राज्यों पर तोहमत लगा दी कि ये राज्य वैट कम नहीं कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी ने कहा कि पेट्रोल डीजल की बढ़ती कीमत का बोझ कम करने के लिए केंद्र सरकार ने एक्साइज ड्यूटी में पिछले नवंबर में कमी की थी। इसके साथ ही राज्यों से भी अपील की गई थी कि वे अपना टैक्स कम करें, जिसके बाद कुछ राज्यों ने तो वैट में कमी की, लेकिन कुछ राज्यों ने अभी टैक्स में कमी नहीं की है। ये राज्य महाराष्ट्र, बंगाल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, केरल, झारखंड, तमिलनाडु राज्य शामिल हैं। ये सभी राज्य गैर–भाजपा सरकार वाले राज्य हैं। इस वक्तव्य के साथ ही प्रधानमंत्री ने जतला दिया कि उनके लिए राजनैतिक हितों से पहले कुछ नहीं है। पेट्रोल–डीजल की कीमतों में किस तरह उछाल आया है, इसे पूरे देश ने भुगता है। लेकिन इस पर केवल गैरभाजपाई दलों से शासित सात राज्यों का नाम लेने का क्या औचित्य। क्या केवल इन राज्यों की जनता को महंगाई तीर सी चुभ रही है। क्या देश के बाकी राज्यों में हालात अच्छे हैं। पेट्रोल–डीजल के दामों पर विधानसभा चुनावों तक रोक लगी हुई थी। हालांकि रूस और यूक्रेन के बीच लड़ाई तब भी छिड़ी हुई थी, लेकिन दाम नहीं बढ़ रहे थे। फिर चुनाव परिणाम 10 मार्च को आए और दामों के बढ़ने का सिलसिला शुरु हुआ। 22 मार्च से अब तक 14 बार तेल के दाम बढ़े हैं। फिलहाल 6 अप्रैल से दाम स्थिर हैं, लेकिन ये राहत कब तक रहेगी, कोई नहीं जानता। सरकार रूस–यूक्रेन की जंग को दामों में बढ़ोतरी का जिम्मेदार बता रही थी, अब राज्यों पर वैट न घटाने का दोष लगा दिया गया है। जबकि सच ये है कि पेट्रोल–डीजल की कीमतें तेल कंपनियां तय कर रही हैं। जो केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्रालय के अधीन काम करती हैं। उसमें राज्य अपना टैक्स वसूलते हैं, और पेट्रोल पंप इसकी भरपाई आम उपभोक्ता से करते हैं। प्रधानमंत्री यह तो कह रहे हैं कि राज्य अपना वैट छोड़ें लेकिन तेल कंपनियों से दामों पर अंकुश लगाने नहीं कह रहे हैं। तेल की कीमतों का असर हर चीज पर पड़ता है, जिस कारण महंगाई बेतहाशा बढ़ी है। पेट्रोल और डीजल पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क से सरकार 26 लाख करोड़ रुपये कमा चुकी है, लेकिन इसके बावजूद राज्यों को जीएसटी का बकाया नहीं दे रही, ये आरोप अब विपक्षी दल केंद्र सरकार पर लगा रहे हैं। भाजपा बनाम विपक्ष की इस लड़ाई में किसका पलड़ा भारी रहेगा, ये तो कहा नहीं जा सकता। मगर आम जनता के लिए राहत की कहीं कोई किरण नहीं दिख रही है। उसे महंगा पेट्रोल–डीजल भी खरीदना ही है और दोगुनी–चौगुनी कीमतों पर सब्जी–अनाज–दूध भी खरीदना ही है। जनता के इन कष्टों को दूर किया जा सकता था, अगर दलगत राजनीति से ऊपर उठकर केंद्र सरकार राज्यों के साथ मिलकर काम करती।

मानव भस्मासुर या प्रकृति?

हर युग महादशा में अस्तित्व के यक्ष प्रश्न लिए होता है। उन्हीं पर दार्शनिकों, विचारकों, ऋषि–मुनियों का चिंतन बना है। उससे धर्म बने और मनुष्य बंधा। मनुष्य मष्तिष्क को समझदार, शुद्ध, सात्विक बनाने की हर संभव कोशिश हुई है। उसे अतीत और अंधकार से बाहर निकालने के पीढ़ी–दर–पीढ़ी आइडिया बने हैं। फतवे जारी हुए। फॉर्मूले सोचे गए। उन्हें आजमाया गया। इस हद तक कि मानव को ...

हरिशंकर व्यास

यक्ष प्रश्न है क्या मनुष्य जानता है कि वह भस्मासुर है? क्या उसे भान है कि गंगोत्री से शुरू आठ हजार साल पूर्व की उसकी गंगा यात्रा अब अंत के उस मुहाने पर है, जिसकी छिन्न–भिन्न धाराएं मनुष्य प्रजाति को प्रलयकारी महासागर के सामने पहुंचाएं हुए है। ऽतभी सवाल है मनुष्य जब अंतरिक्ष को भेदने, ब्रह्माण्ड के नए ग्रह में नई पृथ्वी बनाने की तैयारी में है तो वह पहले अपने भस्मासुरी स्वभाव का डायग्नोसिस क्यों नहीं करता? कैसे मनुष्य दिमाग के भस्मासुरी डीएनए खत्म हो? ऐसा कैसे कि दो–तिहाई से अधिक आबादी अतीत की बेसुधी में जीती हुई है और उन पर भस्मासुरी चेहरों का स्वामित्व है। खलनायक कौन? मानव या प्रकृति? इन दोनों में भस्मासुर कौन? जवाब के लिए तब सोचना होगा कि मनुष्य ने क्या किया और प्रकृति ने क्या दिया? मनुष्य ने अपनी भूख और विपदाओं में प्रकृति को साधा। ब्रह्माण्ड की ऊर्जाओं, जगत की शक्तियों व पंचतत्वों को आह्वान किया। उनके बूते अपने को बनाया। जाहिर है प्रकृति से मनुष्य को समर्थ बनने का वरदान मिला। इससे पृथ्वी का क्या बना? अनुभव और सत्य सामने है। मनुष्य, मनुष्य का और पूरी मानवता (का भस्मासुर है तो पृथ्वी का भस्मासुर भी! कह सकते हैं प्रकृ ति ने मनुष्य का दिमाग क्योंकि चिम्पांजी वाला बनाया है तो मनुष्य भला कैसे दोषी? आखिर उसकी जैविक डीएनए संरचना है। इसके कारण वह आदिम जंगली स्वभाव से बाहर नहीं निकल पाया। उपलब्धियों के क्रमिक विकास, मानवीय मूल्यों की समझ के बावजूद वह जन्मजात अमानुष है। इंसान के चिंतन, विकास, व्यवस्थाओं, राजनीति, आर्थिकी, ज्ञान–विज्ञान सब पर क्योंकि ओरिजनल डीएनए की छाप है तो उन्हीं के कारण आठ अरब लोगों का मानव समाज अहंकार व नासमझी का मारा है। वह भस्मासुर है तो उसे किसने ऐसा बनाया? प्रकृति और ईश्वर का दोष है, जो उन्होंने बीज ऐसा बनाया। यक्ष प्रश्न है क्या मनुष्य जानता है कि वह भस्मासुर है? क्या उसे भान है कि गंगोत्री से शुरू आठ हजार साल पूर्व की उसकी गंगा यात्रा अब अंत के उस मुहाने पर है, जिसकी बिखरी, छिन्न–भिन्न धाराएं मनुष्य प्रजाति को प्रलयकारी महासागर के आगे पहुंचाए हुए है। मानव जीवन के दो अध्याय। एक इतिहास पूर्व का और दूसरा आठ हजार वर्षों का लाइव इतिहास! इतिहास पूर्व में मनुष्य उत्तम खोती व आत्मनिर्भर–स्वतंत्र जीवन के अस्तित्व में जीता था। अगला अध्याय ज्ञात इतिहास के अनुभवों का है! मनुष्य ने अपने कर्मों से पृथ्वी का शृंगार किया। वैभव बनाया। अंतरिक्ष से पृथ्वी मानव विकास की रोशनी से तभी जगमग दिखती है। मगर असलियत में दोनों किस अवस्था में? पृथ्वी और जन–जीवन दोनों की सेहत कैसी? जवाब है आठ अरब लोगों में 95 प्रतिशत मनुष्य जहां बंधनों में शोषित, गंवार और भेड़–बकरी जीवन जीते हुए हैं तो वहीं पृथ्वी की दशा जर्जर, पिघलती, खोखली और बेहाल अवस्था वाली। दोनों विपदा–आपदा की नियति लिए हुए है! दो पलड़े। एक में मानव समाज और दूसरे में पृथ्वी! यों किसी स्केल में दोनों को मापना न उचित है और न संभव। पर दोनों की दशा–दिशा के एक से हाल। आखिर आठ अरब लोगों में कितने प्रतिशत मनुष्य स्वतंत्रता, गरिमा, भौतिक सुख की वह शांत–स्थिर जिंदगी जीते हुए हैं, जैसी कुछ बिरले सभ्य समाजों में है? दूसरा सत्य पृथ्वी का कौन सा इलाका क्षत–विक्षत नहीं है? तभी लाइव सत्य है कि जैसे पृथ्वी घायल, लावारिस अवस्था में सांस लेते हुए है वैसे ही आठ अरब लोगों की भीड़ में बहुसंख्यक लोग घुटी सांस का नारकीय जीवन जीते हुए हैं। तभी वर्तमान और भविष्य दोनों की तस्वीर सफेद–काली है। जिनमें ग्रे शेड से कारण–प्रभाव की ढेरों पहेलियां हैं। दर्शन, इतिहास, मनोविज्ञान के अनुत्तरित कई यक्ष सवाल हैं। न समझ आने वाली अहम बात इतिहास का मानव व्यवहार के चलते बार–बार लौटना है। कभी आशावाद स्थाई नहीं हो पाता। बीसवीं सदी पर गौर करें। कई दफा आशावादी ज्वार आया। लेकिन ढाक के तीन पात और संकट व निराशा के बादल। दो महायुद्ध, उपनिवेश की बेडियों की छटपटाहट और उनसे मनुष्य के बाहर निकलने का लंबा अनुभव। लेकिन फिर एक के बाद एक मानव त्रासदी। बीसवीं सदी में मुक्ति, क्रांति, आजादी, स्वदेशी और नस्ल व राष्ट्र स्वाभिमान के जितने भी अवसर बने उनमें अधिकांश से नए दलदल निर्मित। करोड़ों लोग नेताओं की सनक, उनके विचारों और व्यवस्थाओं की सूली पर बेमौत लटके हैं। अकल्पनीय नरसंहार हुए है। नस्ल, विचार, धर्म और सभ्यताओं के संघर्षों में मनुष्यों की बार–बार बलि चढ़ी है। किस्म–किस्म की लड़ाकू सनकों में मनुष्य जीवन बंधा है। जैसे सभ्यताओं का संघर्ष। इस्लाम के जन्म के बाद से ही लगातार चलता हुआ क्रूसेड। ऐसे ही मूलवासी बनाम स्वामित्ववादी विदेशियों की भिन्नताओं की लड़ाइयां। क्रूसेड के आरंभ से मध्यकाल की सामंतशाही, यूरोपीय पुनर्जागरण की उथल–पुथल, उपनिवेशवाद, फासीवाद, साम्यवाद आदि में मनुष्य की मनुष्य के प्रति बर्बरताओं के क्रम का यदि संपूर्णता से रिकार्ड बने तो यक्ष प्रश्न उभरेगा कि क्या मनुष्य प्रकृति तो कहीं भस्मासुर बनवाने के वायरस लिए हुए नहीं है?

हर युद्ध, हर महाभारत आखिर में शांतिपर्व लिए होता है। तब मनुष्य संकल्प बनाता है आगे ऐसा नहीं होगा। लेकिन भविष्य वापिस वहीं लिए हुए जो पहले हुआ। मनुष्य की लड़ाइयों में ईश्वर प्रगट हुए। उन्होंने लडना धर्म बताया और लड़ाई के बाद शांति पर्व में मानव को भविष्य में ऐसा नहीं करने की नसीहत दी। लेकिन न मनुष्य बदला और न भगवान ने तय किया कि वह अपनी अलौकिक शक्ति से मनुष्य की खोपड़ी में मौजूद चिम्पांजी के जंगली डीएनए का समूह नष्ट करे!

आठ हजार सालों से चला आ रहा लाइव इतिहास सीधी लाल लकीर पर बढ़ता हुआ है! 1918 में पहला महायुद्ध खत्म हुआ तो दुनिया की ताकतों ने नई व्यवस्था बनाकर माना कि आगे लड़ाई नहीं होगी। पर डेढ़ दशक बाद दूसरा महायुद्ध शुरू। उसके खत्म होने के बाद माना गया आगे ऐसा नहीं होगा। लेकिन फिर शीत युद्ध। वह शीत लड़ाई सर्वाधिक संहारक हथियार बनाने, मनुष्य के भस्मासुरी होने के खौफनाक प्रमाण लिए हुए है। 1991 में सोवियत संघ ढहा तो विश्व ने माना अब स्थायी शांति। लेकिन फिर 9ध्11 हुआ। पश्चिम बनाम इस्लाम का क्रूसेड दुबारा जिंदा। इससे अफगानिस्तान, इराक, चेचेन्या के जब अनुभव बने तो उदारवादी पश्चिमी ईसाई समाज ने अनुदारवादी ईसाई रूस के पुतिन तक से भाईचारा सोच डाला! वहीं पुतिन अब ईसाई यूक्रेन को बर्बरता से लहूलुहान करते हुए। नतीजतन नए सिरे से ईसाई सभ्यता के भीतर शैतान और बूचर की मनुष्य प्रकृति पर बहस है। तीन एटमी महाशक्तियों याकि रूस–चीन–पाकिस्तान के स्लाविक, चाइनीज और इस्लामी सभ्यता के साझे की पश्चिमी सभ्यता में नई थ्योरियां चल पड़ी हैं!

दुधमुंहे बच्चे के साथ जेल भेजी गई शातिर चोर

देवरिया। राजकीय रेलवे पुलिस ने साढ़े तीन माह बाद ट्रेन में रेलयात्री के साथ हुई चोरी की घटना का पर्दाफाश किया है। जीआरपी ने शातिर महिला चोर को चोरी के सामानों के साथ गिरफ्तार कर लिया। उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया। महिला की करतूत के चलते उसके तीन माह के दुधमुंहे बच्चे को भी जेल जाना पड़ा। घर में दुधमुंहे बच्चे की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। आरोपित के विरुद्ध गोरखपुर व बस्ती जीआरपी में छह मुकदमें दर्ज हैं। बिहार के दरभंगा जनपद के टाउन थाना अंतर्गत वार्ड नंबर 17 डिघी पश्चिम के रहने वाले महानंद सिंह पुत्र हरिनंदन सिंह नौ जनवरी को बिहार संपर्क क्रांति एक्सप्रेस ट्रेन से परिवार के साथ नई दिल्ली से दरभंगा जा रहे थे। देवरिया सदर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर तीन पर ट्रेन के रुकने पर उनकी पत्नी का पर्स व आभूषण समेत अन्य सामान चोरी हो गया। उन्होंने जीआरपी में मुकदमा दर्ज कराया। जीआरपी मामले की जांच में जुटी थी। सदर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक से संदिग्ध महिला को गिरफ्तार किया। उसके पास से 1.23 लाख रुपये मूल्य के चोरी के आभूषण व बैग बरामद हुआ। बरामद सामानों में सोने की चेन, मंगलसूत्र, तीन जोड़ी चांदी का पायल व बिछिया, 5300 रुपये नकदी, एक मोबाइल व लेडीज हैंडबैग शामिल है। पूछताछ में उसने जनवरी में हुई चोरी की घटना को अंजाम देने की बात स्वीकार की। गिरफ्तार आरोपित 28 वर्षीया पायल उर्फ सानिया पत्नी करीमुद्दीन कुशीनगर जनपद के पटहेरवा थानाक्षेत्र के फाजिलनगर की रहने वाली है। उसके विरुद्ध गोरखपुर जीआरपी में वर्ष 2017 में दो, बस्ती में वर्ष 2016 में एक, वर्ष 2017 में तीन मुकदमें दर्ज हैं। जीआरपी के उप निरीक्षक श्रीराम सिंह ने बताया कि महिला शातिर चोर है। उसे चोरी के सामानों के साथ गिरफ्तार किया गया है।

विकास कार्यों के लिए 50 करोड़ का बजट स्वीकृत

महराजगंज। विकासखंड परिसर में आयोजित क्षेत्रपंचायत की बैठक में विकास कार्यों को लेकर वित्तीय वर्ष 2022 – 23 के लिए 50 करोड़ रुपये के प्रस्ताव पर मोहर लग गई है। जिसमें लेबर बजट के अनुमोदन,नए प्रस्ताव के तहत राजस्व ग्रामों व दो पुरवों को जोड़ने वाले कार्यों की स्वीकृति मिली।बैठक के दौरान विकासखंड द्वारा संचालित समस्त योजनाओं के क्रियान्यवयन पर अधिक फोकस रहा।ग्रामीण स्वच्छ पेय जल,निरूशुल्क बोरिग,शौचालय,प्रधानमंत्री आवास आदि योजनाओं के तहत प्रत्येक पात्र लाभार्थियों तक लाभ पहुंचे इस पर विचार किया गया। पंचम वित्त आयोग और केंद्रीय वित्त आयोग योजनांतर्गत वित्तीय वर्ष हेतु प्रस्ताव व अनुमोदन पर विचार किया गया। बैठक में बतौर मुख्यातिथि पनियरा विधायक ज्ञानेंद्र सिंह ने कहा कि सरकार द्वारा चलाई जा रही विकास एवं जान कल्याणकारी योजनाओं को शत प्रतिशत धरातल पर उतारने में कोई कसर न छोड़ें। ब्लाक प्रमुख रीता देवी ने कहा कि सरकार द्वारा चलाई जा रही समस्त योजनाओं के क्रियान्यवयन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। विशिष्ट अतिथि भाजपा के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष जनार्दन प्रसाद गुप्त, प्रधान संघ के मंडल अध्यक्ष विजय कुमार मिश्र,प्रमुख प्रतिनिधि ओमप्रकाश जायसवाल आदि ने संबोधित किया।संचालन श्यामसुंदर शर्मा ने किया। खंड विकास अधिकारी अजय कुमार श्रीवास्तव, दिनेश जायसवाल, नागेंद्र पटेल, बालेश्वर सिंह, मार्कण्डेय सिंह आदि उपस्थित रहे।

प्राथमिकता के आधार पर कराएं विकास कार्य

आनंदनगर। फरेंदा विकास खंड सभागार में क्षेत्र पंचायत की बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता ब्लाक प्रमुख फरेंदा मनीषा ने किया। पूर्व ब्लाक प्रमुख राम प्रकाश सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे । उन्होंने कहा कि 14 बिदुओं पर की गई चर्चा में आ रही समस्याओं को युद्ध स्तर पर संबंधित अधिकारी और कर्मचारी निपटाएं । जिससे गांव का विकास शत–प्रतिशत हो सके। कार्य योजनाओं को चिन्हित करके कार्य करें। आयोजित बैठक में मेरा तालाब मेरी आजीविका, राज्य वित्त, सामुदायिक शौचालय,मनरेगा, बाल सेवा योजना कोविड–19, बाल सेवा योजना सामान्य से लेकर तमाम बिदुओं पर विस्तार रूप से चर्चा हुई। खंड विकास अधिकारी अमरनाथ पांडेय, एडीओ पंचायत वीरेंद्र यादव, शिवकुमार सिंह, हरेंद्र दुबे, प्रधान रघुनाथ सिंह, राम प्रताप यादव, सर्वदा नंद मिश्र, लालदेव यादव, चौधरी चरण सिंह, गंगाराम यादव, शैलेश, उमाकांत, बाबूराम चौधरी, अमित, अमरसिंह यादव मौजूद रहे।

सर्विस लेन से लेकर फुटपाथ पर अतिक्रमण, राह मुश्किल

महराजगंज । शहर में अतिक्रमण करने वालों की नजर सिर्फ फुटपाथ ही नहीं, वरन सड़क पर भी है। कड़ी कार्रवाई न होने के कारण फुटपाथ से सड़क किनारे तक अतिक्रमण लगातार बढ़ रहा है। इससे पैदल लोगों की समस्या कम होने का नाम नहीं ले रही है। सर्विस लेन पर जहां वाहन चालकों के अलावा दुकानदारों ने कब्जा कर रखा है, वहीं सड़क की रेलिग पर भी दुकानें सजी हुईं हैं। शहर के बीचो–बीच से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग 730 पर सक्सेना चौक से लेकर महुअवा गांव तक सर्विस लेन का निर्माण हुआ है। सर्विस लेन बनाने के पीछे शहर में जाम की समस्या को समाप्त करने का उद्देश्य था, लेकिन फुटपाथ पर अतिक्रमण कर लिया गया है। कहीं पर फलों की दुकानें तो कहीं रेहड़ी–ठेलिया लगी हुई हैं। जिला अस्पताल के समीप तो सर्विस लेन पर दोनों तरफ दुकानें लगने से सड़क आधी हो गई हैं, जिसके कारण आए दिन वाहनों का जाम लगता है। शहर में वाहनों की पार्किंग की भी व्यवस्था नहीं होने से लोग सर्विस लेन पर ही अधिकांश गाड़ियां खड़ी करते हैं, जिससे समस्या बरकरार रहती है। ऐसा नहीं है कि शहर में अतिक्रमण पर प्रशासन की नजर नहीं है। समय–समय पर नगर पालिका प्रशासन और पुलिस के संयुक्त अभियान के माध्यम सर्विस लेन व रेलिग को कब्जा मुक्त कराया जाता है, लेकिन समय बीतने के बाद पुनरू अतिक्रमण शुरू हो जाता है।

देवरिया में गांवों को मिल रही सिर्फ आठ घंटे बिजली, बढ़ी परेशानी

देवरिया। हर दिन चढ़ रहे तापमान के पारा के बीच इन दिनों बिजली की कटौती ने लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी है। जिला मुख्यालय पर कटौती का कोई खास असर नहीं है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में बिजली आपूर्ति लड़खड़ा गई है। लोकल फाल्ट के चलते रोज चार से पांच घंटे तक बिजली आपूर्ति ठप रही। जिले में सवा चार लाख विद्युत उपभोक्ता हैं।

बिजली विभाग के रोस्टर के अनुसार जिला मुख्यालय पर 24 घंटे, तहसील मुख्यालय पर 21 घंटे एवं ग्रामीण क्षेत्रों को 18 घंटे बिजली आपूर्ति करने का निर्देश है। हाल यह है कि जिला मुख्यालय पर 23 घंटे व तहसील मुख्यालय पर 17 घंटे बिजली आपूर्ति की जा रही है। दूसरी तरफ ग्रामीण क्षेत्रों में केवल आठ घंटे बिजली आपूर्ति की जा रही है। इससे लोकल फाल्ट के चलते दिन व रात में कटौती जारी है। दिन में तेज हवा व रात में फाल्ट के नाम पर आपूर्ति प्रभावित है। विद्युत विभाग का दावा व हकीकत

लोड बढ़ने के साथ ही फूंकने लगे ट्रांसफार्मरः गर्मी के मौसम में लोड बढ़ गया है। ट्रांसफार्मर अब जवाब देने लगे हैं। आंकड़ों पर नजर डालें तो एक अप्रैल से 26 अप्रैल तक जनपद में कुल 188 ट्रांसफार्मर जले हैं और उन्हें बदल दिया गया है। चार–पांच दिन में औसतन सात से आठ ट्रांसफार्मर हर दिन जल रहे हैं। वर्कशाप में 12 से 13 ट्रांसफार्मर बनाए जा रहे हैं। इसलिए ट्रांसफार्मर की अभी दिक्कत नहीं शुरू हो सकी है। वर्कशाप में इन दिनों 141 ट्रांसफार्मर बनकर तैयार रखे गए हैं।

लोकल फाल्ट आने पर कंट्रोल रूम में करें शिकायत

इन दिनों लोकल फाल्ट की शिकायत बढ़ गई है। शिकायत मिलने के बाद भी कर्मचारी समय से नहीं पहुंच रहे हैं और फाल्ट को ठीक करने में दिक्कत हो रही है। इसको देखते हुए जिला मुख्यालय पर एक कंट्रोल रूम बनाया गया है, जो 24 घंटे सक्रिय है। यह कंट्रोल रूम अधीक्षण अभियंता के कार्यालय में ही संचालित हो रहे हैं। शिकायत दर्ज कराने के चंद मिनट बाद यह कंट्रोल रूम सक्रिय हो जा रहा है और अधिकतम चार घंटे में शिकायत का निस्तारण किया जा रहा है। कंट्रोल रूम का नंबर 8004930620 है।

मांग के सापेक्ष कम मिल रही बिजलीः इन दिनों बिजली की खपत बढ़ गई है। जिले को कम से कम हर दिन साढ़े तीन मिलियन यूनिट की आवश्यकता है, जबकि इन दिनों ढाई मिलियन यूनिट बिजली ही जिले को प्राप्त हो रही है। जानकारों का कहना है कि कोयले की कमी के चलते बिजली का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इसलिए बिजली की आपूर्ति प्रभावित हो रही है। केस एकरू सलेमपुर के रामपुर बुजुर्ग गांव का 63 केवीए का ट्रांसफार्मर जल जाने से दो दिनों तक बिजली आपूर्ति ठप रही। काफी प्रयास के बाद ट्रांसफार्मर बदला जा सका। इसी तरह सोहनाग का भी ट्रांसफार्मर जल गया। केस दोरू शहर के मालवीय रोड में केबल जलने से दो घंटे तक बिजली आपूर्ति सोमवार की रात ठप रही। काफी प्रयास के बाद बिजली आपूर्ति बहाल हो सकी। केस तीनरू पुलिस लाइन के पास लगा ट्रांसफार्मर सोमवार की रात जल गया। तीन घंटे के बाद मोबाइल ट्रांसफार्मर लगाकर पहले बिजली आपूर्ति बहाल की गई। इसके बाद दूसरे दिन ट्रांसफार्मर बदला जा सका। ग्रामीण क्षेत्रों में तेज हवा के कारण दिन में आपूर्ति बाधित करनी पड़ रही है। रात में कंट्रोल के निर्देश पर कटौती की जा रही है। शहर की स्थिति सामान्य है। उम्मीद है कि जल्द ही ग्रामीण क्षेत्र में बिजली व्यवस्था बेहतर की जाएगी।

शहर के महत्वपूर्ण स्थलों को शांत क्षेत्र घोषित करने की तैयारी

देवरिया। शहरवासियों को ध्वनि एवं वायु प्रदूषण से निजात दिलाने की तैयारी शुरू हो गई है। जल्द ही स्कूल–कालेजों, अस्पतालों, न्यायालय आदि क्षेत्रों को शांत क्षेत्र घोषित किया जाएगा। इसके लिए जिला प्रशासन की तरफ से प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजा जाएगा। शांत क्षेत्र घोषित होने के बाद किसी प्रकार की ध्वनि फैलाने की अनुमति नहीं होगी। उल्लंघन करन पर कार्रवाई की जाएगी।

हाईकोर्ट के आदेश पर शासन ने 11 जनवरी को देवरिया, बस्ती समेत 36 जिलों के डीएम से महत्वपूर्ण स्थलों को शांत क्षेत्र घोषित किए जाने के लिए प्रस्ताव मांगा है, लेकिन विधानसभा चुनाव व एमएलसी चुनाव के कारण प्रस्ताव तैयार नहीं हो सका है। शासन की तरफ से छह अप्रैल को दोबारा प्रस्ताव मांगा गया है। अब तक प्रदेश के 30 जनपदों के महत्वपूर्ण स्थलों को शांत क्षेत्र घोषित किया जा चुका है। अस्पतालों, शैक्षिक संस्थानों व न्यायालयों को घोषित किया जाना है शांत क्षेत्र

ध्वनि प्रदूषण विनियमन एवं नियंत्रण नियम 2000 के संशोधित नियम के मुताबिक अस्पतालों, शैक्षिक संस्थानों और न्यायालयों आदि महत्वपूर्ण स्थलों के आसपास कम से कम 100 मीटर क्षेत्र को शांत क्षेत्र घोषित किया जाएगा। नियम में यह भी स्पष्ट है कि कोई भी क्षेत्र शांत क्षेत्र तभी माना जाएगा जब राज्य सरकार की तरफ से नियम 3(2) के तहत अधिसूचित किया जाएगा। शांत क्षेत्र घोषित होने पर ध्वनि का यह रहेगा मानक

शांत क्षेत्र घोषित होने के बाद अलग–अलग क्षेत्रों के लिये ध्वनि का मानक निर्धारित किया गया है। औद्योगिक क्षेत्र के लिए सुबह छह बजे से रात 10 बजे तक 75 डेसिबल, रात 10 बजे से सुबह छह बजे तक 70 डेसिबल, व्यापारिक क्षेत्र के लिए दिन में 65 और रात में 55 डेसिबल, आवासीय क्षेत्र के लिए दिन में 55 और रात्रि में 45 डेसिबल और शांत क्षेत्र के लिए दिन में 50 व रात में 40 डेसिबल मानक निर्धारित हैं। शहर के महत्वपूर्ण स्थलों को शांत क्षेत्र घोषित करने का प्रस्ताव तैयार करने के लिए एसडीएम सदर को निर्देश दिए गए हैं। प्रस्ताव तैयार होने पर स्वीकृति के लिए शासन को भेज दिया जाएगा।

ऋण प्राप्त कर रोजगार के जरिये करें आर्थिक उन्नति

महराजगंज। उप्र अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम लि द्वारा अनुसूचित जातियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाएं संचालित कर रही हैं। अनुसूचित जातियों के पात्र लोग रोजगार के लिए ऋण प्राप्त कर अपनी आर्थिक उन्नति करें। अनुसूचित जाति के व्यक्तियोंध्परिवार जिनकी वार्षिक आय ग्रामीण क्षेत्र मे 46080 रुपये एवं नगरीय क्षेत्र में 56460 रुपये से अधिक न हो, उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए योजनाएं लागू हैं। सभी योजनाओं में आधार कार्ड, पहचान प्रपत्र, दो फोटो तथा तहसील स्तर से निर्गत आय, जाति व निवास प्रमाण पत्र आदि संलग्न करना आवश्यक है। जिला समाज कल्याण अधिकारी सुधीर पांडेय ने बताया कि दीनदयाल उपाध्याय स्वरोजगार योजना (स्वतरू रोजगार योजना) के अन्तर्गत अनुसूचित जाति के पात्र व्यक्तियों को उद्योग ध व्यवसाय संचालित करने के लिए राष्ट्रीयकृत बैंकों के माध्यम से 20000 रुपये से लेकर 15 लाख रुपये तक की योजनाएं स्वीकृत की जाती हैं। इसमें 10000 रुपये अनुदान व 50000 रुपये से अधिक की योजनाओं में योजना लागत का 25 प्रतिशत हिस्सा चार प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर पर मार्जिन मनी ऋण के रूप में दिया जाता है। जबकि नगरीय क्षेत्र दुकान निर्माण योजना में अनुसूचित जाति के बीपीएल श्रेणी के ऐसे परिवार जिनके पास 13. 32 वर्गमीटर व्यवसायिक स्थल पर भूमि उपलब्ध हो, उन्हें स्वयं द्वारा दुकान निर्माण कराने के लिए दो किस्तों में (58500 व 19500) कुल 78000 रुपये उनके खाते में भुगतान कर दुकान का निर्माण कराया जाता है। इसमें 10000 रुपये अनुदान एवं 68000 रुपये बिना ब्याज का ऋण होता है। जिसकी अदायगी 120 समान मासिक किस्तों में करनी होती है। योजनाओं में लाभ प्राप्त करने के लिए ग्रामीण क्षेत्र के पात्र अनुसूचित जाति के व्यक्ति 24 मई तक आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस योजना में सभी प्रपत्रों के साथ–साथ भूमि का प्रपत्र एवं जमीन का नजरी नक्शा आवेदन पत्र के साथ संलग्न करना आवश्यक है। लाण्ड्री एवं ड्राईक्लीनिग योजना की लागत 216000 रुपये तथा 100000 रुपये है। जिसमें 10000 रुपये अनुदान एवं क्रमशरू 206000 तथा 90000 रुपये बिना ब्याज का ऋण होता है। ऋण की अदायगी के क्रम में आवेदक से एक सरकारी सेवक की गारन्टी भी देनी होती है।

ऋण की अदायगी 60 समान मासिक किस्तों में करनी होती हैं। इसके अलावा अनुसूचित जाति के युवकध्युवतियों के के लिए टेलरिग शाप योजना संचालित है, जिसकी योजना लागत 20000 रुपये है, जिसमें 10000 रुपये अनुदान एवं 10000 रुपये बिना ब्याज का ऋण होता है।

जिपं. की बैठक में उठा सड़क, बिजली, मुआवजे का मुद्दा

महराजगंजः जिला पंचायत की सभागार में हुई बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी, अधिशासी अभियंता विद्युत तथा अधिशासी अभियंता सिचाई खंड प्रथम के अनुपस्थित रहे। इस पर मुख्य विकास अधिकारी ने सभी से स्पष्टीकरण मांगा है। बैठक में सदस्यों ने सड़क, बिजली, तारबाड़ व मुआवजे की समस्याएं उठाईं। बैठक में पिछले कार्रवाई की पुष्टि की गई। इसके बाद विभिन्न विभागों के विकास कार्यों पर चर्चा की गई और वित्त वर्ष 2022–23 की कार्य योजना पर विचार किया गया। जिपंस सदस्य सुरेश साहनी से जहां सड़क व तारबाड़ का मुद्दा उठाया, वहीं त्रिभुवन वर्मा ने लक्ष्मीपुर देउरवा में चिकित्सालय में चिकित्सक नहीं होने की बात बताई। मुख्य विकास अधिकारी गौरव सिंह सोगरवाल ने बताया कि 32 ग्राम पंचायतों को चिह्नित कर लिया गया है। कार्य शीघ्र शुरू कर दिया जाएगा। मुख्य विकास अधिकारी ने अपर मुख्य अधिकारी, जिला पंचायत को सदन में पूछे गए प्रश्नों के संबंध में की गई कार्रवाई के संदर्भ में संबंधित सदस्यों को तीन दिन के भीतर अवगत कराने का निर्देश दिया। सदस्यों की मांग पर सीडीओ ने क्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों के शिलापटों पर जिला पंचायत सदस्यों का नाम अंकित करवाने का निर्देश दिया। मुख्य विकास अधिकारी ने उन लोगों के खिलाफ एफआइआर दर्ज कराने का निर्देश दिया है, जिन्होंने विकास कार्यों के लिए भूमि अधिग्रहण की प्रतिपूर्ति के रूप में पैसा तो ले लिया है, लेकिन भूमि की रजिस्ट्री से इन्कार कर रहे हैं। बैठक में अनुपस्थित रहने पर सीएमओ डा. एके श्रीवास्तव, अधिशासी अभियंता विद्युत हरिशंकर, सिचाई खंड प्रथम के अधिशासी अभियंता विनोद कुमार से स्पष्टीकरण मांगा है। उन्होंने कहा कि सदन की बैठक में सभी संबंधित विभागों के अधिकारी स्वयं उपस्थित रहें और सदन में उठे मुद्दों पर गंभीरतापूर्वक कार्रवाई कर सदन को अवगत कराएं। इससे पूर्व अपर मुख्य अधिकारी रमेश कुमार सिंह ने सभी अतिथियों व सदस्यों का स्वागत कर बैठक की शुरूआत की। जबकि समापन मा. जिला पंचायत अध्यक्ष रविकांत पटेल ने धन्यवाद ज्ञापित कर किया। इस दौरान सदर विधायक जयमंगल कन्नौजिया, पनियरा ज्ञानेंद्र सिंह, फरेंदा वीरेंद्र चौधरी, नौतनवा ऋषि त्रिपाठी, जिला विकास अधिकारी जगदीश त्रिपाठी समेत सभी संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

मतदान से 72 घंटे पहले सील होगी भारत–नेपाल सीमा

भैरहवा (नेपाल)। पड़ोसी देश नेपाल में स्थानीय निकाय चुनाव को लेकर भारत–नेपाल के अधिकारियों की संयुक्त बैठक भैरहवा में हुई। इसमें नेपाल की ओर से लुंबिनी प्रांत के रूपनदेही, नवलपरासी व कपिलवस्तु तथा भारत की ओर से महाराजगंज और सिद्धार्थनगर के उच्चाधिकारी शामिल हुए। रूपनदेही के मुख्य जिला अधिकारी ऋषि राम तिवारी ने बताया कि बैठक में नेपाल से शराब, भारत से मादक पदार्थ, नशीली दवाओं पर नियंत्रण व मानव तस्करी रोकने समेत अन्य मुद्दों पर चर्चा हुई । इसी तरह मतदान की तारीख से 72 घंटे पहले दोनों देशों के बीच सीमा को सील करने का निर्णय लिया गया। चुनाव में कोई अराजक तत्व खलल न डाल सके, इसके लिए सुरक्षा व्यवस्था को लेकर दोनों देशों की पुलिस व एसएसबी जवान आपसी सामंजस्य स्थापित कर सीमा पर गश्त करेंगे। वहां हर तरह की गतिविधियों पर पूरी नजर रखेंगे। संदिग्ध मिले लोगों पर कार्रवाई की जाएगी। महराजगंज के डीएम सतेन्द्र कुमार, सिद्धार्थनगर के जिलाधिकारी संजीव रंजन, एसपी महराजगंज डा.कौस्तुभ, एसपी सिद्धार्थनगर डा.यशबीर सिंह, रूपनदेही के पुलिस प्रमुख रवींद्र रेग्मी, सहायक मुख्य जिला अधिकारी कमल प्रसाद पांडेय, ध्रुव बहादुर कुवर, सशस्त्र पुलिस उपाधीक्षक प्रकाश पौडेल, नवलपरासी के मुख्य जिला अधिकारी श्रवण कुमार पोखरेल, एसपी ऋषि राम कडेल, सशस्त्र पुलिस अधीक्षक कुमार क्षेत्री, कपिलवस्तु से मुख्य जिला अधिकारी धर्मेंद्र कुमार मिश्रा, पुलिस प्रमुख एसपी दान बहादुर कार्की, सशस्त्र पुलिस अधीक्षक सूर्य बहादुर सेन , एसएसबी 22वीं बटालियन के कमांडेंट मनीष कुमार मीणा, 66वीं बटालियन नौतनवा के कमांडेंट बरजीत सिंह, नौतवन एसडीएम राम सजीवन मौर्य, 22वीं बटालियन के सहायक कमांडेंट अंजनी कुमार तिवारी, एसएसबी 43वीं बटालियन कमांडेंट सस्वप कुंडू उपस्थित रहे।

प्रेमी के लिए पति को मार डाला

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। पति–पत्नी और 2 छोटे–छोटे बच्चों ने रात में साथ ही खाना खाया।फिर सब सोने चले गए। बाद में पत्नी ने ही अपने पति की हत्या कर दी। ये कोई फिल्मी कहानी नहीं है बल्कि, गोरखपुर के रेतवईयां गांव में अपने आशिक के प्यार में पागल महिला ने अपने पति का मुंह और नाक तकिए से दबाकर उसे मौत के घाट उतार दिया।फिलहाल पुलिस ने आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया है। दूसरे युवक से था प्रेम संबंध रेतवईयां गांव के रहने वाले मुकेश चौहान की शादी 6 साल पहले महराजगंज के सिरसिया टोला की रहने वाली खुशबू चौहान से हुई थी। मुकेश मजदूरी करता था। मुकेश और खुशबू के 2 बेटे हैं। सुबह वह उठकर घर के कामों में लग गई।दोनों बेटों जब पिता को नहीं देखा तो वह उन्हें जगाने कमरे में पहुंचे।जहां मुकेश मरा हुआ पड़ा था। दोनों बच्चे चिल्लाने लगे,जिसपर घर के बाकी लोग और पड़ोसी पहुंचे। परिवार के लोगों ने फौरन पुलिस को सूचना दी।मौके पर पहुंची पुलिस ने छानबीन शुरू की और पत्नी से पूछताछ शुरू की।खुशबू पुलिस के सामने टूट गई और उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया।

- **तकिए से नाक और मुंह दबाकर हत्या की, फिर बगल में सो गई**
- **सुबह दिखाने के लिए फूट-फूटकर रोने लगी**

2 बार प्रेमी के साथ भाग चुकी है आरोपी महिला

दैनिक बुद्ध का संदेश

गांव वालों ने बताया कि खुशबू 2 बार अपने प्रेमी के साथ भाग चुकी है।पुलिस में शिकायत होने के बाद लौटी थी। मृतक मुकेश के भाई विजय चौहान ने हत्या के बाद पुलिस को तहरीर दी है। तहरीर में उसने बताया कि खुशबू और चिलबिलवा के गोविंद मौर्या का अफेयर था। वह 2 बार उसी के साथ भागी थी। इस मामले में इंस्पेक्टर पिपराइच मधुपनाथ मिश्रा ने बताया कि शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है। आरोपी पत्नी पुलिस हिरासत में है। उससे पूछताछ की जा रही है।

निहत्थे व्यक्ति को दबंगों ने दौड़ाकर पीटा

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। खजनी थाना क्षेत्र सियर गांव का विवेक यादव पुत्र जमुना यादव अपने मोटरसाइकिल से किसी शादी में जा रहे थे तभी सामने से आ रहे डंपर ने विवेक यादव के मोटरसाइकिल से टकरा गई विवेक ने एतराज जताया और मोटरसाइकिल लेकर चला गया डंपर चालक ने इसकी सूचना अपने मालिक प्रिंस मौर्य को दी प्रिंस मौर्य बौखलाए अपने 8 से 10 साथियों के साथ नंदा पर गांव में शादी समारोह में गए विवेक के ऊपर ताबड़तोड़ लाठी डंडा राठ से हमला कर लहूलुहान कर दिए इतने में भी इनका मन नहीं भरा दबंगों ने विवेक के बाबा के घर चढ़कर गाली गुप्ता जानमाल की धमकी दी। दबंगों द्वारा यह भी कहा गया कि आप लोग कहीं भी जाएं आप लोगों की सुनवाई नहीं होगी। पीड़ित विवेक यादव सुबह से ही थाने में बैठा है लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है। विवेक सुबह से ही दर्द से करा रहा है लेकिन पुलिस द्वारा पीड़ित व्यक्ति का कोई भी डॉक्टरी नहीं कराया गया।

- **पीड़ित व्यक्ति ने ३३४ नंबर पर सूचना दें पुलिस की ली मदद**
- **खजनी थाने में पीड़ित सुबह से बैठा लेकिन नहीं दर्ज हो रहे मुकदमे**
- **मामला खजनी थाना क्षेत्र सियर गांव का**

अघोषित विद्युत कटौती के सम्बंध में युमंद ने अधीक्षण अभियंता को सौंपा ज्ञापन

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा संचालित संगठन युवक मंगल दल के कार्यवाहक जिलाध्यक्ष मनोज कुमार दीक्षित के नेतृत्व में युवक मंगल दल की टीम ने गुरुवार को अधीक्षण अभियन्ता को ज्ञापन सौंपकर अघोषित विद्युत कटौती पर रोक लगाने की माँग की है। श्री दीक्षित ने बताया कि हमारे संगठन के द्वारा विगत दस वर्षों से भीषण गर्मी में पशु पक्षियों के लिए पानी और दाना का व्यवस्था किया जाता हैं। ऐसे में इस भीषण गर्मी में नगर क्षेत्र के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्रों में महज तीन से चार घण्टे किस्तो में विद्युत

आपूर्ति किया जा रहा है।जिसमे आम जनमानस के साथ साथ पशु पक्षियों को भी पीने का पानी उपलब्ध नहीं हो पा रहा अट्ठारह घण्टा व शहरी क्षेत्रों में चौबीस घंटा विद्युत आपूर्ति किये जाने का दावा किया जा रहा है लेकिन जिम्मेदार अधिकारियों के द्वारा इसे ठेंगा दिखाने का काम किया जा रहा है और सरकार की छवि को धूमिल करने का प्रयास किया जा रहा है जिसे हम युवक मंगल दल के कार्यकर्ता कत्तई बर्दाश्त नही करेंगे।वही युवक मंगल दल जिलाकोषाध्यक्ष श्री अजय केशरी व जिलाकार्यसमिति सदस्य बिरजू पटेल ने बताया कि यदि विद्युत विभाग द्वारा जल्द से जल्द विद्युत आपूर्ति बहाल नही किया जाता तो कार्यकर्ता ग्रामीणों संग आंदोलन करने पर बाध्य होंगे।इस मौके पर सदर ब्लाक अध्यक्ष जितेन्द्र मौर्या, अशोक मौर्या,राजेश पटेल, सुनील पटेल, विजयानन्द, बिहारी, संदीप इत्यादि लोग मौजूद रहे।

चार प्रदेशों को जोड़ने वाले सोनभद्र में हो राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। अलग पूर्वांचल राज्य की मांग कर रहे संगठन पूर्वांचल राज्य जनमोर्चा के संगठन प्रमुख पवन कुमार सिंह एडवोकेट ने वृहस्पतिवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर मांग किया कि सोनभद्र जनपद आदिवासी क्षेत्र होने के साथ–साथ वन एवं पहाड़ो से आच्छादित है। तथा बिहार, झारखंड छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश की सीमाओं से जुड़ा हुआ है। किंतु आज भी शिक्षा के क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ है। मोर्चा मांग करता है कि विंध्याचल मंडल में जो विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव है उसे जनपद सोनभद्र में ही स्थापित किया जाए।

क्योंकि सोनभद्र जनपद लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। तथा उच्च शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है जबकि मिर्जापुर एवं भदोही से सटे हुए जनपदों में विश्वविद्यालय हैं। इसलिए उन लोगों को शिक्षा ग्रहण करने में कोई परेशानी नहीं होती किंतु जनपद सोनभद्र के चारों तरफ चार प्रदेश होने के बावजूद यहां के लोग उच्च शिक्षा से वंचित हैं। अतः मोर्चा मांग करता है कि विश्वविद्यालय यहीं पर स्थापित हो। जिससे यहां के लोग आदिवासी बहुल क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर सके और यहां के लोग उच्च शिक्षा प्राप्त कर समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकें। क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे लोग समाज से जुड़ सकते हैं तथा अपने जनपद को पिछड़ेपन से दूर करने में सहयोग कर सकते हैं। इसके लिए जल्द ही मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीमा सिंह की अध्यक्षता में तीन सदस्य संजीव कुमार उर्फ काकु सिंह ईश्वर जायसवाल एडवोकेट व नवीन कुमार पांडेय एडवोकेट की प्रतिनिधिमंडल प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री से मिलकर जनपद सोनभद्र में विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए ज्ञापन देगा। इस आशय की जानकारी काकु सिंह प्रदेश प्रवक्ता पूर्वांचल राज्य जनमोर्चा ने दिया।

श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के राष्ट्रीय अधिवेशन में पत्रकार हितों के लिए हुआ मंथन

लखनऊ। उ. प्र. श्रमजीवी पत्रकार यूनियन द्वारा आयोजित इंडियन जर्नलिस्ट यूनियन (आइजेयू) का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन मथुरा के होटल गोवर्धन पैलेस में सरस्वती पूजन के साथ शुरू हुआ जिसमें सर्वश्री के श्रीनिवास रेड्डी आईजेयू अध्यक्ष, अंजनैल्लू उपाध्यक्ष, बलविंदर सिंह जम्मू महामंत्री, वीवी राजन सचिव, अमर मोहन प्रसाद सचिव, के. नरेंद्र रेड्डी सचिव के साथ कार्य समिति सदस्य शिवेंद्र सिंह बिहार, कृष्णा रेड्डी तेलंगाना, सोम सुंदर आंध्र प्रदेश, देउलापल्ली अमर तेलंगाना आंध्र प्रदेश सरकार के सूचना कलाकार दर्जा राज्यमंत्री, डीएसआर सुभाष अध्यक्ष तमिलनाडु प्रदेश, चंदू जनार्दन आंध्र प्रदेश, एन राजेश महासचिव केरल, आर रमेश महासचिव तमिलनाडु, एन. रंगाराव आंध्र प्रदेश, राहत अली महासचिव तेलंगाना प्रदेश, माती महाराजा अध्यक्ष पांडिचेरी, गिरीश पंत प्रदेश महासचिव उत्तराखण्ड, जी नागदेवन महासचिव पांडिचेरी, श्रीनिवास गुंडारी अध्यक्ष महाराष्ट्र, प्रमोद खरात महामंत्री महाराष्ट्र, अलापति सुरेश कुमार संपादक स्क्राइबर न्यूज सहित देश के 26 प्रदेशों से यूनियन के पदाधिकारी एकत्र हुए। उत्तर प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष डा. राजेश त्रिवेदी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सभी प्रांतों से पधारे साथियों का उत्तर प्रदेश की इस कृष्ण जन्म भूमि की पावन धरती पर हार्दिक अभिनंदन करते हैं। उत्तर प्रदेश में पत्रकार साथियों के साथ शासन प्रशासन स्तर पर हो रहे उत्पीड़न को लेकर मैंने बीते एक वर्ष के कार्यकाल के दौरान यूनियन के माध्यम से निरंतर संघर्ष किया है। साथ ही पत्रकार साथियों को न्याय भी दिलाया है। हम लगातार पत्रकारों के हित को लेकर संघर्ष करते आ रहे हैं, जिसके चलते हमारी यूनियन के सदस्य संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। प्रदेश में अनेक जनपद हमारे संगठन से जुड़ रहे हैं। प्रदेश महासचिव रमेश शंकर पांडेय ने अपने संबोधन में कहा कि हमने पत्रकार साथियों को जोखिम सुरक्षा के लिए सामूहिक बीमा योजना लागू करने का प्रयास किया है। इस क्रम में मथुरा जनपद के 300 पत्रकार साथी बीमा से आच्छादित किए जा चुके हैं। बाकी जनपदों में प्रयास जारी है। महिला पत्रकारों को भी हमारी यूनियन पूरा सम्मान व सुरक्षा प्रदान करने के लिए तत्पर है।

मथुरा जिला अध्यक्ष नरेंद्र भारद्वाज के कुशल संयोजन में आयोजित इस अधिवेशन में देश के पत्रकार हितों से सम्बंधित कई मुद्दों पर अहम गोष्ठी सम्पन्न हुई। सम्मेलन में पत्रकारों की विभिन्न समस्याओं के साथ–साथ पत्रकारों की पेंशन उनकी सुरक्षा आवास और कोरोना में उनके साथ हुई अप्रिय घटनाओं पर सहायता देने की मांग उठाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष शैलजा कांत मिश्र ने देश के शहीदों की याद दिलाते हुए कहा कि जैसा देश होगा वहां के पत्रकार भी वैसे ही होंगे, क्योंकि पत्रकार भी यहीं से होते हैं। देश जितना सभ्य, सुरक्षित और मजबूत होगा निश्चित रूप से लोग भी वैसे ही होंगे। कार्यक्रम के विशेष अतिथि प्रोजेक्ट आत्मनिर्भर के क्रिएटर युवा समाजसेवी रंजीत पाठक चतुर्वेदी ने मथुरा में यमुना की दुर्दशा पर पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा पिछले तीन दशक से समस्या हल नहीं हो पा रही है कोई दिन ऐसा बाकी नहीं जाता जिस दिन समाचार पत्रों में यमुना प्रदूषण की बात न छपती हो ऐसे में समस्त देश के पत्रकारों को इस मांग को पूरा करने के लिए सरकार को भी विचार करना चाहिये। उन्होंने प्रोजेक्ट आत्मनिर्भर के संबंध में विस्तृत रूप से जानकारी दी और आगामी 9 वर्ष की कार्य योजना पर प्रकाश डाला उन्होंने प्रभावी तरीके से प्रोजेक्टर के माध्यम से देश भर से आए श्रमजीवी पत्रकारों को जानकारी दी। यूनियन के उत्तर प्रदेश सचिव एवं मथुरा इकाई के अध्यक्ष नरेंद्र भारद्वाज ने जानकारी देते हुए बताया कि श्रमजीवी पत्रकार यूनियन हमेशा से पत्रकार हित में कार्य करती रही है। मथुरा इकाई ने भी अपनी अहम भूमिका निभाते हुए पत्रकारों के हितों की लगभग हर लड़ाई में साहसिक कदम उठाए हैं और कई मामलों में सफलता पाई है। उन्होंने आगे बताया कि मथुरा में जो राष्ट्रीय अधिवेशन होने रहा है इसमें इंडियन जर्नलिस्ट यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया के पूर्व सदस्य के श्रीनिवास रेड्डी की प्रमुख सहमति थी और यूनियन उनका आभार व्यक्त करती है जो उन्होंने ब्रज में यह आयोजन कराया यह ब्रज के पत्रकारों के लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि पहली बार कोई राष्ट्रीय अधिवेशन छोटे से शहर में हो रहा है यहां से जो मांग उठेगी वह निश्चित रूप से उससे सरकार पूरा करेगी। विधायक मेघश्याम सिंह ने पत्रकारों की मांगों को पूर्ण कराने के लिए सरकार से पहल करने की बात कही तथा पत्रकारों के हित में कार्य करने का आश्वासन दिया। वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री मोहन स्वरूप भाटिया ने कहा कि पत्रकारों को अपनी आवाज बुलंद करने के लिए अपने अंदर नैतिक परिवर्तन लाना होगा और जो नैतिकता है उस पर चलना होगा। वरिष्ठ पत्रकार चंद्र प्रताप सिंह सिकरवार ने कहा कि इस मंच से सस्वर मांग पत्रकारों की पेंशन की है जो पूर्ण होनी चाहिए कई राज्यों के पत्रकार सरकार से पेंशन पा रहे हैं लेकिन उत्तर प्रदेश में नहीं। उत्तर प्रदेश में सरकार पत्रकारों की मांगों को पिछले तीन दशक से दरकिनार करती चली आ रही है इस पर श्रमजीवी पत्रकार यूनियन को विचार करना होगा। वरिष्ठ पत्रकार किशन चतुर्वेदी ने कहा कि आज हम लोग ब्रज के पत्रकार देश भर से आए पत्रकारों की बात को सुनने के लिए यहां मौजूद है यह हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। एमएलसी ठाकुर ओमप्रकाश सिंह इस अवसर और कहा कि वह हमेशा पत्रकारों के साथ रहे हैं और आज भी वह पत्रकारों के हित की बात के लिए उनके साथ खड़े हैं। भाजपा मथुरा जिलाध्यक्ष मधु शर्मा ने कहा कि सरकार बनाने में पत्रकारों की अहम भूमिका रही है। हम पत्रकारों के साथ हैं। कांग्रेस के जिलाध्यक्ष ने पत्रकार उत्पीड़न पर कड़ा एतराज जताते हुए सरकार से मांग की कि बगैर जांच के किसी भी पत्रकार के खिलाफ मुकदमा न दर्ज हो। इस अवसर पर जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल ने उत्तर प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार यूनियन (आइजेयू) को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की एवं कार्य कार्यक्रम में न पहुंच पाने पर खेद जताया। उ. प्र. श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष डा. राजेश त्रिवेदी एवं महासचिव रमेश शंकर पांडेय की अगुवाई में प्रदेश उपाध्यक्ष सरदार रविंदर सिंह, प्रदेश सचिव नरेंद्र भारद्वाज, पं. निर्मल सिंह यादव, भूपेंद्रमणि त्रिपाठी, बरेली मण्डल उपाध्यक्ष श्रीमती गीता शर्मा, लखनऊ मण्डल अध्यक्ष लक्ष्मीकान्त तिवारी, महामंत्री राकेश कश्यप, गोपाल कौशिक ने अधिवेशन में विभिन्न राज्यों से पधारे लोगों का स्वागत किया।

अगले दिन समापन सत्र में पत्रकारों के हित हेतु कई प्रस्ताव पारित किये गये, जिसमें प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया (पीसीआई) के पुनरू गठन हेतु न्यायालय में जोरदारी से पैरवी करने का निर्णय लिया गया। प्रेस काउंसिल भंग करने के खिलाफ पारित हुआ पत्रकार सुरक्षा कानून को लेकर प्रस्ताव पारित किया गया। पत्रकारों की पेंशन की घोषणा के बावजूद प्रदेश सरकारों द्वारा उसमें की जा रही हीला हवाली तथा नए नए परिवर्तन करके पत्रकारों को उत्पीड़ित किए जाने के विरोध में प्रस्ताव पारित किया गया। पत्रकारों पर निरंतर हो रहे हमले और उन पर प्रशासन द्वारा कार्यवाही न किए जाने को लेकर भी निंदा प्रस्ताव पारित हुआ। स्थानीय होटल में दो दिन चलने वाला आईजेयू का भव्य अधिवेशन कार्यकारिणी की बैठक के पश्चात समाप्त हो गया। दो दिवसीय इस अधिवेशन में कई प्रस्ताव पारित किये गये जिनमें पत्रकार सुरक्षा कानून को प्रमुखता से लागू कराने की मांग की गई। लगातार हो रही घटनाओं से पत्रकारों का हो रहा उत्पीडन के खिलाफ आवाज बुलंद कर सरकारों के खिलाफ निंदा प्रस्ताव पारित किया गया। साथ ही प्रदेश सरकारों द्वारा पत्रकारों को पेंशन देने की घोषणा के पश्चात हिला–हवाली करने पर विरोध का प्रस्ताव पास किया। सरकार द्वारा सारे प्रमाणों के बाद भी मीडिया हाउसों से प्रमाण पत्र मांगने का विरोध करते हुए प्रस्ताव पारित किया। अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष के श्री निवास रेड्डी ने आईजेयू की सभी ब्रांचों को अगले सप्ताह तक स्थानीय मुद्दों के साथ पत्रकार सुरक्षा कानून को लेकर एक ज्ञापन स्थानीय सांसद को देने के साथ प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति को डाक द्वारा ज्ञापन देने की सलाह दी।

दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन की मेहमानबाजी उ.प्र. श्रमजीवी पत्रकार यूनियन मथुरा इकाई द्वारा की गई। यूनियन के जिलाध्यक्ष नरेन्द्र भारद्वाज द्वारा सभी आगुंतकों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया। साथ ही संस्कृति विश्वविद्यालय के पीआरओ किशन चतुर्वेदी ने संस्था की तरफ से सभी आगुंतकों को उपहार देकर सम्मानित किया। राष्ट्रीय सम्मेलन में 26 प्रदेशों से आये डेलीगेट के साथ मथुरा के पत्रकारों पद्मश्री मोहन स्वरूप भाटिया, देशभक्त वाजपेयी, किशन चतुर्वेदी, सीपी सिकरवार, अजय शर्मा, निरंजन धुरंधर, दिनेश आचार्य,अजय शर्मा, योगेश भारद्वाज, मोहनश्याम शर्मा, दीपक चतुर्वेदी बैंकर, रमेशचंद, लोकेश चौधरी, सुमित गोस्वामी, मोहन, दिनेश तरकर, सुरेश सैनी, हेमंत शर्मा, रवि यादव, गोपाल कौशिक, दिनेश भारती, आदि सैंकड़ों पत्रकार मौजूद थे।

जहरीले पानी से जान बचाएं सरकारः आइपीएफ

दैनिक बुद्ध का संदेश

म्योरपुर/सोनभद्र। सोनभद्र के स्कूलों में लगे हैंडपंपो में फ्लोराइड और आयरन की ज्यादा मात्रा पाएं जाने पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए आल इंडिया पीपुल्स फ्रंट के जिला संयोजक कृपा शंकर पनिका ने वृहस्पतिवार को उत्तर प्रदेश सरकार से अतिशीघ्र जहरीले पानी से बच्चों और ग्रामीणों की जान बचाने के लिए वाटर फिल्टर प्लांट लगाने की मांग की है। गौरतलब है कि सोनभद्र विशेष कर दुद्धी तहसील के दर्जनों गांवों में सरकार द्वारा करायी पीने के पानी की जांच में फ्लोराइड और आयरन की मानक से ज्यादा मात्रा मिली है। इस जहरीले पानी से बच्चों के विकलांग होने का गम्भीर खतरा पैदा हो सकता है।इस सम्बन्ध में आइपीएफ ने पूर्व में भी राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को लिखा था. जिसमें मुख्य सचिव को आदेश भी हुआ था कि जहरीले पानी से प्रभावित गाँव में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था सरकार करे। लेकिन सरकारों ने इस पर ध्यान नही दिया. बहरहाल अब सरकार को तत्काल कार्यवाही करते हुए जहरीले पानी से प्रभावित स्कूलों और गांवों में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था करनी चाहिए। इस आशय की जानकारी कृपा शंकर पनिका जिला संयोजक आल इंडिया पीपुल्स फ्रंट ने दिया।

पीठासीन अधिकारी ने अधिवक्ताओ व बीमा कंपनियों के पदाधिकारियो के साथ कि बैठक

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण व राज्य विधिक सेवा

प्राधिकरण के तत्वाधान में वृहस्पतिवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्षध्जनपद न्यायाधीश अशोक कुमार प्रथम के आदेशानुसार आगामी 14 मई को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक मोटर दुर्घटना से सम्बंधित वादों के लिए आज मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण (एमएसिटी)के पीठासीन अधिकारी संजय हरि शुक्ला ने बीमा कंपनियों के पदाधिकारियो व अधिवक्ताओ के साथ बैठक कर अधिक से अधिक वादों का निस्तारण के लिए उचित दिशा निर्देश दिया गया। इस दौरान जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पूर्ण कालिक सचिव पंकज कुमार ने बताया कि न्यायालय में लंबित वाद को आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत में शीघ्र निस्तारित कराये। सुलह समझौते के आधार पर लोक अदालत में मुकदमो के शीघ्र निस्तारण से श्रम और धन दोनों की बचत होती है। साथ ही किसी भी पक्षकार की हार व जीत नही होती है। अतः आम जनमानस से अपील है कि आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत में समय से प्रतिभाग सुनिश्चित करे।

अमेरिकी विश्वविद्यालय द्वारा छात्रा अनाहिता सिंह को 1,62,000 अमेरिकी डालर की स्कॉलरशिप

लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, गोमती नगर (द्वितीय कैम्पस) के इण्टरनेशनल कैम्ब्रिज सेक्शन की छात्रा अनाहिता सिंह को अमेरिका के सेन्टर कालेज द्वारा 1,62,000 अमेरिकी डालर की स्कॉलरशिप से नवाजा गया है। अनाहिता को यह स्कॉलरशिप चार वर्षीय उच्चशिक्षा अवधि के दौरान प्रदान की जायेगी। उक्त जानकारी सी.एम.एस. के मुख्य जन–सम्पर्क अधिकारी हरि ओम शर्मा ने दी है। श्री शर्मा ने बताया कि अमेरिका एवं इंग्लैण्ड के कई अन्य विश्वविद्यालयों ने भी इस मेधावी छात्रा को स्कॉलरशिप के साथ उच्चशिक्षा हेतु आमन्त्रित किया है। अनाहिता ने इस सफलता का श्रेय विद्यालय के अपने शिक्षकों व शान्तिपूर्ण शैक्षिक वातावरण को दिया है। सी.एम.एस. संस्थापक डा. जगदीश गाँधी ने सी.एम.एस. छात्रा की सफलता पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उसके उज्जवल भविष्य की कामना की है। श्री शर्मा ने बताया कि प्रतिवर्ष भारी संख्या में सी.एम.एस. छात्र विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में उच्चशिक्षा हेतु चयनित होते हैं। इस वर्ष अभी तक सी.एम.एस. के 80 से अधिक छात्रों ने अमेरिका, इंग्लैण्ड, कैनडा, आस्ट्रेलिया, जापान, सिंगापुर, जर्मनी आदि विभिन्न देशों के ख्यातिप्राप्त विश्वविद्यालयों जैसे कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, कैलीफोर्निया इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (कैलटेक), मैसाचुसेट्स इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एम.आई.टी.), स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी, कार्नेल यूनिवर्सिटी, मेलबर्न यूनिवर्सिटी एवं नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर आदि में स्कॉलरशिप के साथ चयनित होकर लखनऊ का नाम रोशन किया है। श्री शर्मा ने बताया कि सी.एम.एस. प्रदेश में एकमात्र एस.ए.टी. (सैट) एवं एडवान्स प्लेसमेन्ट (ए.पी.) टेस्ट सेन्टर है जो उत्तर प्रदेश एवं आसपास के अन्य राज्यों के छात्रों को विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में स्कॉलरशिप के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने में मदद कर रहा है।

यात्री सुविधा के दृष्टिगत ऑनलाइन बुकिंग प्लेटफार्म से स्वचलित रिफण्ड प्रक्रिया 13 अप्रैल से प्रारम्भ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश परिवहन निगम में नवम्बर, 2021 में बस यात्रियों हेतु बस में काउन्टरों से नकद एवं डिजीटल माध्यम द्वारा टिकटिंग कार्य के लिये सेवा प्रदाता का चयन किया गया था। चयनित सेवा प्रदाता को सम्पूर्ण प्रदेश में परियोजना के अन्तर्गत कार्य के लिये सर्वप्रथम लखनऊ तथा गाजियाबाद के डिपोज में इसे पायलेट आधार पर संचालित करके आगे विस्तार करना था। सेवा प्रदाता द्वारा इस पायलेट परियोजना हेतु 05 दिन पूर्व स्थानीय कैसरबाग व अवध डिपो की बसों के लिये ई0टी0एम0 मशीन आधरित टिकटिंग भी प्रयोगिक तौर पर शुरू की गयी एवं क्षेत्रीय अधिकारियों से फीडबैक लेकर सुधार कराया जा रहा है। सेवा प्रदाता द्वारा लखनऊ व गाजियाबाद क्षेत्र के लगभग 1200 परिचालकों को ई0टी0एम0 मशीन सम्बन्धी सम्पूर्ण एप्प ट्रेनिंग दी गयी और दोनों क्षेत्रों में यह प्रक्रिया लगातार जारी है। परिवहन निगम द्वारा यात्री सुविधा के दृष्टिगत ऑनलाइन बुकिंग प्लेटफार्म से स्वचलित रिफण्ड प्रक्रिया 13.04.2022 से प्रारम्भ कर दी है, जिसके अन्तर्गत यात्री द्वारा टिकट कैन्सिल करने पर सिस्टम द्वारा आटोमैटिक रिफण्ड स्वतः यात्री के खाते में वापस हो रहा है। न्प् अथवा फत् ब्कम बंद करके भुगतान करने वाले यात्रियों के खाते में रिफण्ड भुगतान, टिकट कैन्सिल करते ही तुरन्त खाते में पहुँच जायेगा। अन्य माध्यम से टिकट बुक होने पर अधिकतम 1–2 दिन में यात्री को टिकट रिफण्ड राशि खाते में प्राप्त हो रही है।

एंबुलेंस में कराया टेक्नीशियन ने सुरक्षित प्रसव,

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। जिले में 108,102 एंबुलेंस सेवा वरदान साबित

होती जा रही हैं आम जनमानस एंबुलेंस सेवा का भरपूर लाभ ले रहे हैं ताजा मामला प्रकाश में आया है अहिरवन डिह निवासी बड़का देवी अचानक प्रसव पीड़ा होने लगी प्रसव पीड़ा होने पर बेचू ने 102 एंबुलेंस सेवा पर फोन करके एंबुलेंस को बुलाया चंद मिनटों में एंबुलेंस मौके पर पहुंची और मरीज को एंबुलेंस में बैठाकर इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन ने वाइटल की जांच की और मरीज को लेकर अस्पताल की तरफ चल दिए लेकिन रास्ते में अचानक तेज प्रसव पीड़ा होने लगी तब टेक्नीशियन पिंटू चौधरी ने अपने पायलट कृष्णकांत से एंबुलेंस को किनारे लगाने पर कहा और एंबुलेंस में ही सुरक्षित प्रसव कराया और जच्चा–बच्चा को सुरक्षित जिला महिला चिकित्सालय में भर्ती कराया जिले के प्रोग्राम मैनेजर सचिन राज जिला प्रभारी अजहर सईद और अविनाश तिवारी एवं रविंद्र दिवेदी कार्य की प्रशंसा की।

मुसलमान समझें कि किस तरह उनसे वोट ले कर भाजपा की मदद कर रहे हैं अखिलेश

लखनऊ। राष्ट्रपति चुनाव में गैर कांग्रेस गैर भाजपा प्रत्याशी को समर्थन देने के अखिलेश यादव के बयान पर टिप्पणी करते हुए अल्पसंख्यक कांग्रेस अध्यक्ष शाहनवाज आलम ने इसे भाजपा को बैकडोर से मदद करने की कोशिश बताया है। उन्होंने कहा कि सपा और बसपा में भाजपा के करीब दिखने का कंपटीशन चल रहा है। शाहनवाज आलम ने जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि मुसलमानों को समझ लेना चाहिए कि उन्होंने जिस सपा को विधान सभा में एकमुश्त वोट दिया था वो किस तरह भाजपा को मदद पहुँचा रही है। उन्होंने कहा कि इससे पहले भी जब कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी जी के नेतृत्व में 13 विपक्षी दलों के नेताओं ने देश में बढ़ती अल्पसंख्यक विरोधी हिंसा के खिलाफ संयुक्त बयान जारी किया था तब भी अखिलेश यादव और मायावती जी ने उस पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया था। बसपा सुप्रीमो मायावती के भाजपा के सहयोग से राष्ट्रपति बनने की कोशिश करने वाले अखिलेश यादव के बयान पर उन्होंने कहा कि अखिलेश जी को लगता है की भाजपा के सहयोग से राष्ट्रपति बनने का पहला अधिकार मुलायम सिंह यादव जी का है।

क्योंकि 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले उन्होंने खुले तौर पर मोदी जी के पीएम बनने की ख्वाहिश जाहिर कर अपनी बिरादरी का वोट भाजपा को ट्रांसफर करवाया था। उन्हें लगता है कि भाजपा उनके परिवार के साथ धोखा कर के मायावती को राष्ट्रपति बनाना चाहती है। यह सब सपा और बसपा में भाजपा का सबसे वफादार सहयोगी बनने के आपसी कंपटीशन का मामला है। शाहनवाज आलम ने कहा कि पिछले दिनों ही अखिलेश यादव जी ने मोदी जी के कघ्रीबी उद्योगपति गौतम अडानी के दुनिया के 5 वें सबसे अमीर आदमी बनने पर बधाई दे कर भी अपने को मोदी जी के कघ्रीब दिखाने की कोशिश की थी। जबकि पूरा देश जानता है कि मोदी जी अडानी को देश बेच कर उन्हें अमीर बनवा रहे हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़कर किसान बन सकते हैं आत्मनिर्भरः निर्मल वर्मा

किसानों एवं महिलाओं ने मेले में सीखी प्राकृतिक खेती की बारीकियां

सीतापुर। कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़कर किसान आत्म निर्भर बन सकता है। यह बात बिसवां विधायक निर्मल वर्मा ने कृषि विज्ञान केंद्र कटिया में आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव किसान भागीदारी मेले के आयोजन के दौरान बतौर मुख्य अतिथि कही। मेले के उद्घाटन के दौरान विधायक श्री वर्मा ने कहा कि एक सप्ताह चलने वाले इस अभियान में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय तथा अन्य मंत्रालयों के सहयोग से किसानों को कृषि और अन्य संबद्ध योजनाओं के बावत जागरूकता का प्रमुख उद्देश्य है। कृषक वैज्ञानिक संवाद, प्रदर्शनी व अन्य प्रसार माध्यमों के द्वारा किसानों को सीधा लाभ मिल रहा है। उन्होंने किसानो को आत्मनिर्भर बनाने प्राकृतिक खेती एवं कृषि विज्ञान केंद्र की तकनीकों को अधिक से अधिक अपनाने हेतु किसानो को प्रेरित किया। स्वदेशी . मंच के प्रान्त प्रचारक डा. आनंद दीक्षित ने किसानो को स्वदेशी एवं परम्परागत कृषि तकनीकी ज्ञान अपनाने एवं अपने बीजो को संरक्षित करने हेतु प्रेरित किया।

उपनिदेशक कृषि अरविन्द मोहन मिश्रा ने लघु एवं मध्यम किसानो हेतु समन्वित कृषि प्रणाली व माडल अपनाने किसानो से अपील की। जबकि इनके अवलोकन हेतु विभाग द्वारा हर संभव प्रयास का अस्वाशन दिया। जिला उद्यान अधिकारी सौरभ श्रीवास्तव ने उद्यान विभाग द्वारा कृषक हितैषी योजनाओं की जानकारी दी। पशु चिकित्सा अधिकारी मानपुर डा. डीके. सिंह ने पशु टीकाकरण, कृतिम गर्भाधान, एवं नस्ल सुधार पर सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी। केंद्र के प्रभारी अध्यक्ष डा. दयाशंकर श्रीवास्तव ने केंद्र की प्रमुख गतिबिधियों से अवगत कराया।

उन्होंने प्राकृतिक खेती व जैव मूल्य सम्बर्धित फसलों को अपनाने हेतु जोर देते हुए कहा कि प्रकृति ने अपार सम्पदा दे रखी है। जरुरत है उन्हें जानने एवं संरक्षित कर मूल्य सम्बर्धित उत्पाद निर्माण कर कृषि में नया उद्यम स्थापित करने की। मुख्य अतिथि ने किसान व महिलाओं को मिनी किट सीड के रूप में साँवाँ, कोदो, मडुवा व रागी के बीज वितरित किए। उन्होंने अन्य अधिकारीयों के साथ कार्यक्रम में प्रदर्शित विभिन्न विभागों की तकनीकों का अवलोकन किया। इस दौरान केंद्र के कृषि वैज्ञानिको द्वारा लिखित 2 पुस्तिकाओं किनोवा की खेती व प्राकृतिक खेती का विमोचन किया गया। इस दौरान पूर्व ब्लॉक प्रमुख बिसवां राकेश वर्मा, ग्राम प्रधान कटिया विक्रम चौधरी, उप संभागीय कृषि प्रसार अधिकारी अख्तर हुसैन, पूर्व उपसंभागीय कृषि प्रसार अधिकारी बीरेंद्र सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक इफको श्री शिव चंद्र शुक्ल सहित कुल 217 लोगो ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का संचालन विनय शुक्ला व शैलेन्द्र सिंह ने किया। जबकि डा. आनन्द सिंह ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

बुलडोजर चलवा कर प्रशासन ने की अतिक्रमण हटाओ अभियान की शुरूआत

सीतापुर। कस्बे में अवैध अतिक्रमण के विरुद्ध सुबह प्रशासन ने बुलडोजर चलवाकर अतिक्रमण हटाओ अभियान की शुरुआत की। लगभग सप्ताह भर पहले एसडीएम सदर अनिल कुमार, सीओ सदर प्रवीण कुमार,प्रभारी निरीक्षक ब्रजेश कुमार त्रिपाठी तथा अधिशासी अधिकारी अरविन्द सिंह की अगुवाई में व्यापारियों के साथ एक बैठक हुई थी जिसमें एसडीएम सदर ने व्यापारियों से अपील कर कस्बे को अतिक्रमण मुक्त करने को कहा था तथा लगातार एनाउंसमेंट करवाया जा रहा था तथा अवैध अतिक्रमण करने वाले लोगों को नगर पंचायत द्वारा नोटिस भी दी गई थी इसके बावजूद उन लोगों ने अतिक्रमण हटाने में रुचि नहीं दिखाई। सुबह जैसे ही मुख्य चौराहे पर अधिकारी एवं भारी पुलिस बल के साथ बुलडोजर पहुंचे चारों तरफ हड़कंप मच गया। सर्वप्रथम बुलडोजर द्वारा चौराहे से लखीमपुर–सीतापुर मार्ग पर अभियान चलाकर लहरपुर रोड को अतिक्रमण से मुक्त कराया गया ततपश्चात चौराहे से शुगर मिल तक अभियान चलाया गया।शुरुआत में एक ही बुलडोजर द्वारा अतिक्रमण हटाया जा रहा था परंतु एसडीएम के निर्देश पर ईओ ने तीन और बुलडोजर बुलवाए जिसके बाद अतिक्रमण के विरुद्ध एक साथ चार बुलडोजर गरजने लगे और खो खो ,टीन शेड,पक्के चबूतरे,दीवारें,पक्की सीढ़ियों को तोड़ दिया गया। थाने के सामने वाली मस्जिद में बने अवैध अतिक्रमण को हटाने के लिए प्रशासन ने मौलाना को शुक्रवार सुबह दस बजे तक का समय दिया है। इस संबंध में एसडीएम सदर ने बताया शुक्रवार को यह अभियान पुनः शुरू होगा तथा कस्बे में बचे हुए स्थानों सीएचसी, मिल बाजार, बस्ती,स्टेट बैंक के सामने,गन्ना समिति आदि स्थानों को अतिक्रमण से मुक्त करवाया जाएगा। अधिशासी अधिकारी ने कहा कस्बे को अतिक्रमण मुक्त रखना उनकी पहली प्राथमिकता है सरकारी जमीन पर जो अवैध अतिक्रमण किए हैं वह गुरुवार तक हटा लें शुक्रवार से अभियान की शुरुआत पुनः होगी। इस दौरान कोतवाली देहात प्रभारी निरीक्षक मुकुल प्रकाश वर्मा, निरीक्षक राजेश कुमार,जुगुल किशोर सिंह, क्यूआरटी टीम,महिला पुलिस बल के साथ साथ भारी संख्या में पुलिस बल एवं नगर पंचायत के कर्मचारी उपस्थित रहे।

अज्ञात कारणों से लगी ट्रांसफार्मर में आग

सीतापुर। तहसील के मुख्य गेट के दाहिनी ओर रखे बिजली विभाग के ट्रांसफार्मर में अज्ञात कारणों के चलते अचानक आग लग गई। देखते ही देखते ट्रांसफार्मर में तेज लपटें उठने लगी और ट्रांसफार्मर धू–धू कर जलने लगा। ट्रांसफार्मर के जलने से कचहरी में हड़कंप मच गया। अफरा–तफरी के बीच मौके पर पहुंचे उपजिलाधिकारी बिसवां अनुपम मिश्रा व तहसीलदार अबिचल प्रताप सिंह ने ट्रांसफार्मर जलने की सूचना आनन–फानन में बिजली विभाग को दी। बता दें कि इस ट्रांसफार्मर से बिसवां तहसील के कार्यालयों सहित रजिस्ट्री कार्यालय व मोहल्ला शंकरगंज सहित आदि इलाकों की विद्युत आपूर्ति होती है। उधर सूचना मिलने के बाद आनन–फानन में मौके पर बिजली विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पहुंचकर आग पर काबू पाने का प्रयास किया हाल फिलहाल ट्रांसफार्मर के जलने से इस भीषण गर्मी में विद्युत आपूर्ति बाधित हो गई है और लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

जिले के 50 आयुर्वेदिक चिकित्सकों का हुआ सम्मान

राजस्थान औषधालय मुंबई का आयुर्वेदिक डाक्टर्स सम्मान समारोह सम्पन्न

सीतापुर। राजस्थान औषधालय (आरएपीएल ग्रूप) मुम्बई द्वारा पूरे भारत भर में चलाये जा रहे डॉक्टर्स सम्मान समारोह के तहत जिला मुख्यालय स्थित के नवीन चौक के पास स्थित निजी होटल में देर रात डॉक्टर्स सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमे जनपद के 50 आयुर्वेदिक चिकित्सकों को सम्मानित किया गया। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि डॉ. यूसी.दिकसित ने कहा कि आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने अपनी जान की बाजी लगाकर लाखों कोविड–19 के मरीजों की जिंदगी बचाई, कोरोना योद्धा आयुर्वेद के चिकित्सक हैं। अगर भारत में आयुर्वेदिक औषधियों तथा प्रणाली का प्रयोग नहीं किया जाता तो कोरोना को नियंत्रित करना मुश्किल साबित होता। उन्होंने सभी चिकित्सकों को बधाई देते हुए कहा कि आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने कोरोना से जंग जितवाने में मुख्य भूमिका निभाई। साथ ही उस समय हर घर में आयुर्वेदिक प्रणाली का उपयोग किया गया। उसी को देखते हुए आरएपीएल ग्रुप मुम्बई ने पूरे भारत भर के आयुर्वेदिक चिकित्सकों को जिला स्तर पर कार्यक्रम आयोजित कर सम्मानित करने का निर्णय लेकर चिकित्सकों का मनोबल बढ़ाने का कार्य किया है। समारोह के बतौर अतिथि डॉ. अशोक बाजपाई ने कहा कि राजस्थान औषधालय मुम्बई द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सकों का सम्मान कर नई ऊर्जा दी हैं, आयुर्वेदिक चिकित्सकों द्वारा जिस तरह से जिले में कोरोना काल के दौरान सेवा की गई। उसी का परिणाम हैं, कि राजस्थान औषधालय ने उन्हें सम्मान से नवाजा। उन्होंने कहा कि कोविड–19 के दौरान चिकित्सकों ने अपनी जान की बाजी लगाकर मानवीय सेवा कर साबित किया कि चिकित्सक भगवान का दूसरा रूप होता है। उसी को देखते हुए आरएपीएल ग्रूप ने जिले के डॉक्टर्स का सम्मान कर मनोबल बढ़ाने का काम किया है। इस दौरान डॉक्टर्स सम्मान समारोह में डॉ. जुनैद जमाल, डॉ. पी.एल.देवल बंगाली, डॉ. अरूण अवस्थी, डॉ. सोमित अग्रवाल, डॉ. श्याम किशोर ने कहा कि आयुर्वेदिक औषधियां कोरोना काल के दौरान कारगर साबित हो रही थी। उस समय आयुर्वेद के डॉक्टर्स के उपर भी बड़ी जिम्मेवारियां आई, जिसका जिले के चिकित्सकों ने सामना किया। उसी मेहनत को समझते हुए राजस्थान औषधालय ने सम्मानित कर आयुर्वेदिक डॉक्टर्स को नई दिशा देने का काम किया है। डॉक्टर्स सम्मान समारोह की शुरूआत धन्वतंरि पूजा से की गई, जिसमें अतिथियों ने धन्वतंरि की प्रतिमा पर दीप प्रजवल्लित किया। डॉक्टर्स सम्मान समारोह में अतिथियों एवं जिले के सभी डॉक्टर्स को राजस्थान औषधालय मुम्बई (आरएपीएल ग्रूप) परिवार की ओर से माला, शॉल, साफा प्रतिक चिन्ह् भेंट कर सम्मानित किया गया। इस दौरान कार्यक्रम में आरएपीएल ग्रूप के चौयरमेन रहे डॉ. एस. डी. चोपदार को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान डॉक्टर्स सम्मान समारोह में कार्यक्रम प्रभारी अवध कुमार, डीएसएस प्रभारी अरविन्द शुक्ला, डॉ. एस.वी. शुक्ला, डॉ. प्रवीण रस्तोगी, डॉ. प्रदीप पांडे, डॉ. विनित मिश्रा, डॉ. अभिषेक त्रिपाठी कॉर्डिनेटर बुशरा शैख सहित जिले भर के आयुर्वेदिक चिकित्सक उपस्थित थे।

कार्रवाई के बाद भी नहीं सुधरे दुकानदार, सड़कों पर कर रहे अतिक्रमण

सीतापुर। कई बार कार्यवाही होने के बावजूद भी लोग सुधर नहीं रहे हैं। जिला पंचायत कार्यालय के सामने एवं कलेक्ट्रेट जाने वाले मार्ग व लाल बाग चौराहा जाने वाला मार्ग पर अवैध रूप से बाजार के दुकानदारों एवं बाजार से खरीदारी करने वाले लोगों की गाड़ियां किस प्रकार सड़कों पर खड़ी हो जाती हैं, जिसके कारण कलेक्ट्रेट आने जाने वाले लोगों को भारी तकलीफों का सामना करना पड़ता है। जब कोई बड़ा अधिकारी इस जाम में फंसता है तब जाकर यातायात अधिकारी यहां पर खड़ी गाड़ियों का चालान काट कर ऐसे लोगों के ऊपर कार्रवाई करते हैं। पर उसके बावजूद भी लोग सुधरने का नाम नहीं लेते है। वहां पर ड्यूटी करने वाले होम गार्डों की भी यह गाड़ी वाले नहीं सुनते। क्षेत्राधिकारी नगर पीयूष कुमार सिंह के निर्देशन में शहर कोतवाल टीपी सिंह के द्वारा अस्पताल रोड से लेकर लालबाग होते हुए जिला अस्पताल जाने वाली रोड पर सड़कों पर कब्जा किए दुकानदारों को सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि सड़कों पर किसी प्रकार की भी अवैध कब्जे ना देखने को मिले वरना आज तो खाली चेतावनी है कल कानूनी कार्यवाही भी की जाएगी। शहर कोतवाल तेज प्रताप सिंह के साथ यातायात प्रभारी फरीद अहमद, सिविल लाइन चौकी इंचार्ज प्रदीप दुबे, तानसेन गंज चौकी इंचार्ज उग्रसेन सिंह एवं भारी फोर्स साथ में मौजूद रहे।

भीषण गर्मी में अघोषित बिजली कटौती से उपभोक्ता परेशान

सीतापुर। भीषण गर्मी हो रही है। आम जनमानस बेहाल है। क्षेत्र की बिजली व्यवस्था भी रुला रही है। बांसुरा विद्युत उपकेंद्र से क्षेत्र में बिजली आपूर्ति होती है। इस उपकेन्द्र से सैकड़ों गांव जुड़े है। शासन के मंशा के अनुसार गांवो को अठारह घण्टे विद्युत आपूर्ति का रोस्टर बना है। गांवो में मिलने वाली अठारह घण्टे की बिजली आपूर्ति ग्रामीणों को पांच घन्टा भी मिल पाना मुश्किल हो रहा है। इन दिनों पड़ रही भीषण गर्मी में बिजली की अघोषित कटौती व लो वोल्टेज के कारण ग्रामीणों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बिजली विभाग की घोर लापरवाही के कारण ग्रामीणों में भारी रोष देखने को मिल रहा है। क्षेत्र के रामपुर मथुरा, बहादुरगंज , गोंडा देवरिया, सोहरिया, पारा रमनगरा, तुलसीपुर खरिका, बरुही, मिश्रण पुरवा, सुरजनपुर, टिकठा, केवड़ा, भगौतीपुर, रायसेनपुर आदि गांवो में लगभग एक माह से ग्रामीण लो वोल्टेज की समस्या से जूझ रहे। ग्रामीणों का आरोप है कि जिम्मेदारों की लापरवाही के चलते सभी को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। आये दिन जर्जर तारों के टूटने से बिजली आपूर्ति बाधित हो रही है। जिस पर बांसुरा पॉवर हाउस के जिम्मेदार ध्यान नही देते है। ग्रामीण बृजेश शुक्ला, देशराज सिंह, विनीत मिश्रा, शुभम तिवारी, सुनील मिश्रा, पुष्पेंद्र अवस्थी, मनीष शुक्ला, आलोक कुमार आदि का कहना है कि पिछले महीने से लो वोल्टेज व बिजली कटौती के कारण विद्युत उपकरण जैसे, पंखा, कूलर, फ्रीज आदि नही चल रहे है। सबसे ज्यादा समस्या मोबाइल चार्जिंग की होती है। भीषण गर्मी के कारण रात के समय ग्रामीण सो भी नहीं पाते है। छोटे, बड़े, बूढ़े सभी ग्रामीण बिजली न मिलने से परेशान हैं। ग्रामीण बिजली विभाग के टोल फ्री नंबरों पर शिकायत कई बार कर चुके है लेकिन बिजली विभाग के अधिकारियों के कानों में जुएं भी नही रेंग रहे है। जिससे क्षेत्रवासियों को काफी समस्या झेलनी पड़ रही है।

किसान विज्ञान मेला 2022 का हुआ आयोजन

सीतापुर। किसानों को भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति, कृषि, औद्यानिक, पशुपालन, पशु चिकित्सा, मत्स्य, कृषि यंत्रो की नई एवं नवाचार तकनीक के बारे में जागरूक करने करने के उद्देश्य से 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत 'किसान भागीदारी प्राथमिकता हमारीष् अभियान' के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बरपुर में 'किसान विज्ञान मेला 2022' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर किसान–वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति, कृषि यंत्रीकरण, उन्नत कृषि तकनीक, कृषि नवाचार पर कृषि प्रदर्शनी भी लगाई गई। किसान विज्ञान मेले में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकगण, कृषि विभाग, कृषि रक्षा विभाग, पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विभाग, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, विभिन्न महिला स्वयं सहायता समूह एवं प्रगतिशील महिला तथा पुरुष किसानों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर आयोजित कृषि गोष्ठी में किसान–वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम की शुरुआत में कृषि वैज्ञानिक डॉ विनोद कुमार सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला तथा केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ सुरेश सिंह ने मानव जीवन में प्राकृतिक कृषि के महत्व पर प्रकाश डालते हुए किसानों की आय में वृद्धि की नवीनतम तकनीकों के बारे में जानकारी प्रदान की तथा महिला एवं पुरुष किसान भाइयों से अनुरोध किया कि आप लोग इस गोष्ठी में बताई हुई तकनीकों पर ध्यान देकर अपने सामाजिक आर्थिक स्तर को भी ऊंचा उठा सकते हैं साथ ही साथ मानव स्वास्थ्य में भी परिवर्तन ला सकते हैं। कृषि प्रदर्शनी में कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विभाग, कृषि रक्षा विभाग, पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विभाग, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, नीरज मिश्रा एवं सतीश शुक्ला का प्राकृतिक कृषि उत्पाद, बसंत लाल का प्राकृतिक कृषि हेतु निवेश उत्पाद, रामकली एवं छोटेलाल के सब्जियां एवं फल, शिव भोले महिला स्वयं सहायता समूह अदमापुर मां दुर्गा महिला स्वयं सहायता समूह कुंवरपुर ने प्रतिभाग किया।

अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी सजगता से किया जाये:जिलाधिकारी

हरदोई।जिलाधिकारी अविनाश कुमार ने अधिकारियोंध्कर्मचारियों को निर्देशित किया कि सभी कार्यालय में समय से आकर अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी सजगता एवं निष्ठा से करें। इसी क्रम में अपर जिलाधिकारी वंदना त्रिवेदी द्वारा कलेक्ट्रेट के न्याय सहायक पटल का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान फाइलों का रख–रखाव सही दशा मे नही पाया गया जिसके कारण अपर जिलाधिकारी ने न्याय सहायक द्वितीय को निर्देशित किया कि फाइलों का रख–रखाव सही तरीके से किया जाये। सफाई व्यवस्था सही रखी जाये इसके अतिरिक्त शासकीय अधिवक्ताओं के मानदेय के भुगतान के सम्बन्ध में अवगत कराया गया कि फरवरी 2022 तक का मानदेय भेजा जा चुका है, मार्च एवं अप्रैल का बजट उपलब्ध न होने के कारण भुगतान नही हो सका। न्याय सहायक पोर्टल पर 03ध्25 गैंग चार्ट, गैंगस्टर, पशु बाजार, चौकीदार, लोक तंत्र सेनानी, रासुका, मुख्यमंत्री आर्थिक सहायता, पेट्रोलपम्प के अनापत्ति प्रमाणपत्र सम्बन्धी पत्रावली का अवलोकन किया गया। पेट्रोलपम्प की अनापत्ति प्रमाणपत्र की बन्द पत्रावलियों का रखरखाव को सही नही पाया गया, जिस पर नाराजगी व्यक्त करते हुए न्याय सहायक द्वितीय को कठोर चेतावनी देते हुए निर्देशित किया गया कि सात दिवस में फाईलों का रखरखाव सही कर ले एवं गार्ड फाईल की स्थिति अद्यतन कर ले। कलेक्ट्रेट स्थित नजारत का अतिरिक्त मजिस्ट्रेट द्वितीय स्वाती शुक्ला द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय नाजिर सदर अरूण श्रीवास्तव व अन्य कर्मचारीगण उपस्थित थे। श्रीमती शुक्ला द्वारा नजारत में उपस्थिति पंजिका, फाईलों का रख रखाव, बिल बाउचर,गार्ड फाईल, दाखिला,साफ सफाई आदि की व्यवस्था का निरीक्षण किया गया। नाजिर सदर को फाईलों के व्यवस्थित रख रखाव एवं कार्यालय की साफ सफाई पर विशेष ध्यान रखने हेतु निर्देशित किया गया।

एमएसपी से अधिक भाव पर बिक रहा किसानों का गेहूं, क्रय केंद्रों पर छाया सन्नाटा

हरदोई। अपर जिला सहकारी अधिकारी मंसाराम के साथ क्रय एजेंसी पीसीएफ के क्रय केंद्र पर साधन सहकारी समिति लिमिटेड खितौली, चकौती विकासखंड भरखनी का निरीक्षण किया गया। क्रय केंद्रों पर सभी व्यवस्थाएं सही पाई गई। क्रय केंद्र पर अब तक कुल 303 कुंटल गेहूं क्रय किया जा सका है।सारा भुगतान भी पीसीएफ द्वारा कर दिया गया है। निरीक्षण के समय केंद्र पर उपस्थित कृषकों रानू अग्निहोत्री पुत्र स्वर्गीय उमाकांत, शिव प्रकाश पुत्र रामप्रकाश एवं धीरेंद्र पाल सिंह पुत्र शंकर बक्स सिंह द्वारा अवगत कराया गया कि गांव के समस्त कृषकों का गेहूं सरकारी भाव से अधिक दामों पर बिका है। अधिक दामों पर बिकने के कारण केंद्रों पर कोई भी किसान अपना गेहूं नहीं लाना चाहता है। कृषको ने बताया कि 26 अप्रैल को अल्लाहगंज मंडी शाहजहांपुर के व्यापारी गांव से 210 रुपए प्रति कुंतल के हिसाब से गेहूं खरीद कर ले गए हैं। अधिक मूल्य व नकद भुगतान के कारण किसान अपना गेहूं क्रय केंद्रों पर नहीं ले जा रहे हैं। ऐजा फार्म पर भी क्रय केंद्रों का निरीक्षण किया गया। केंद्र प्रभारी नूर मोहम्मद ने बताया कि अभी तक यहां पर केवल 208 कुंटल गेहूं की खरीद हो पाई है। केंद्र पर उपस्थित कृषको नायब सिंह, हरकरतार सिंह और बलतेज सिंह ने बताया कि कृषकों को नकद मूल्य के साथ–साथ एमएसपी से अधिक गेहूं का भाव मिल रहा है तो क्रय केंद्रों पर कौन किसान ले जाने को तैयार होगा। खाद्य विपणन अधिकारी अनुराग पांडे द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में भी इसी प्रकार का जिक्र किया गया है जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह निश्चित हो चला है कि क्रय केंद्रों पर खरीदारी नहीं हो पाएगी क्योंकि एमएसपी से अधिक मूल्य व नकद धनराशि मिल रही है यही नहीं, दूसरे जिले के व्यापारी आकर अधिक दाम पर गांव से ही गेहूं खरीद कर रहे हैं। ऐसे में सरकार को खरीद के लिए ध्यान देना चाहिए और किसानों से एमएसपी पर गेहूं खरीद करने के लिए गांव गांव जाकर व्यवस्था करनी होगी।

पौधारोपण कर संकल्प 1000 ने मनाया जन्मदिन

हरदोई।जनपद में पौधारोपण कर एक अलग पहचान बना चुकी सामाजिक संस्था संकल्प 1000 ने आज पुनः जनपद के युवा सामाजिक कार्यकर्ता एवं दृष्टि दोष विशेषज्ञ कर्ण सिंह राणा का जन्मदिन पौधारोपण कर मनाया। संस्था के संस्थापक श्याम जी गुप्ता ने बताया कि प्रिय छोटे भाई कर्ण लगातार समाजिक कार्यों में संलिप्त रहते हैं और आज उनका शुभ जन्मोत्सव है इस खुशी में संकल्प 1000 परिवार उनको शुभकामनाएं देता है और उनके जन्मोत्सव को हम सभी ने पौधारोपण कर मनाया है। वहीं हरदोई नगर पालिका अध्यक्ष सुखसागर मिश्र मधुर ने न्यू सनबीम पब्लिक स्कूल पहुंचकर केक कटवाकर कर्ण सिंह राणा को जन्मदिन की बधाई दी। युवा सामाजिक कार्यकर्ता एवं दृष्टि दोष विशेषज्ञ कर्ण सिंह राणा ने बताया कि वो प्रत्येक वर्ष अपना जन्मदिन 5 पौधे रोपित कर मनाते हैं इस वर्ष संकल्प 1000 की ओर से ये आयोजन किया गया, उसके लिए मैं नगर पालिका अध्यक्ष एवं संकल्प 1000 की पूरी टीम समेत आए हुए सभी अतिथियों का आभार प्रकट करता हूँ।

जमीनी विवाद में वीरेन्द्र तिवारी का पक्ष हुआ चोटिल

जमीनी विवाद में दो पक्षों में मारपीट, कई घायल

सीतापुर। थाना क्षेत्र अंतर्गत दो पक्षों में जमीनी विवाद के चलते मारपीट हो गया। जिसमें कई घायल हुए। चोटिलो को सीएचसी रामपुर मथुरा लाया गया । जहां पर उनका प्राथमिक उपचार हुआ । बताते चलें कि थाना क्षेत्र के मल्लपुर मजरे मथुरा निवासी वीरेंद्र तिवारी ने रामपुर मथुरा थाने में तहरीर देते हुए आरोप लगाया कि विपक्षी कल्लू राम से पूर्व में जमीनी विवाद था। उसका सुलह समझौता भी हो गया था लेकिन सुबह लगभग 6.30 बजे विपक्षी कल्लू राम से कुछ कहासुनी हो गई। जिस पर कल्लू राम, आसाराम , मायाराम , रोहित भद्दी भद्दी गालियां देकर मारपीट करने पर आमादा हो गए। लात घूसा व लाठी डंडों से प्रहार कर दिया। हो रहे विवाद का शोर सुनकर वीरेंद्र तिवारी के पक्ष की ओर से अमर तिवारी , अंकित कुमार व पूनम देवी बचाने आई लेकिन विपक्षी इन पर भी टूट पड़े। जिनमें इन सब को काफी चोटें आई। जिनको रामपुर मथुरा स्वास्थ्य सामुदायिक केंद्र में प्राथमिक उपचार कराया गया है और न्याय पाने के लिए वीरेंद्र तिवारी ने थाने में लिखित तहरीर दे दिया है।

हिन्दी दैनिक
बुद्ध का संदेश
समाचार पत्र
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स, ज्योतिनगर, मधुकरपुर, निकट हीरो होंडा एजेन्सी, सिद्धार्थनगर, 272207 उ.प्र. से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.– UPHIN/2012/49458
संस्थापकः– स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादकः– राजेश कुमार शर्मा
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के वचन एंव सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इन से उत्पन समस्त विवाद जनपद सिद्धार्थनगर,न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।
8795951917, 9453824459
ई-न्यूज पेपरः- www.budhakasandesh.com
E-Mail ID:. budhakasandeshnews@gmail.com

विद्या ने शेयर किया भूल–भूलैया 2 का ट्रेलर तो बोले फैंस– हम आपको वापस चाहते हैं....

कार्तिक आर्यन, कियारा आडवाणी और तबू स्टारर मूवी भूल भूलैया 2 का मंगलवार को ट्रेलर रिलीज कर चुके है। कुछ को मूवी का ट्रेलर पसंद आया है और कुछ को नहीं। लोग कार्तिक आर्यन की तुलना अक्षय कुमार के साथ करने लगे है। भूल भुलैया में विद्या बालन थीं जिन्होंने मोंजोलिका का रोल अदा किया था। दर्शकों को वो भी बहुत याद आ रही हैं। खुद विद्या बालन ने मूवी का ट्रेलर देखकर इस पर रियेक्शन दे दिया है। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम फिल्म का ट्रेलर साझा करते हुए लिखा है, भूषण कुमार और पूरी टीम को इस हॉन्टेड कॉमेडी फिल्म के लिए बधाई। ट्रेलर जाना पहचाना लग रहा है...हाहा...इस रोलर कोस्टर की सवारी को फिर से महसूस करने का इंतजार नहीं कर पा रही हूं। भूल भुलैया 2 सिनेमाघरों में 20 मई को रिलीज हो रही है। जैसी ही अभिनेत्री ने ट्रेलर डाला वैसी ही फैंस के कमैंट्स भी आए लगे। फैंस को उनके बिना ये मूवी अधूरी लग रही है। एक फैन ने कहा, भूल भूलैया आपके बिना अधूरी है। दूसरे ने लिखा, हमारे लिए भूल भुलैया माने मोंजोलिका और मोंजोलिका माने विद्या और विद्या अगर न हो तो हमको ऐसे भूल भुलैया मे जाना ही नहीं। खैर टीम को शुभकामनाएं। ऐसा ही और कमेंट में लिखा गया, बिना अक्षय कुमार और विद्या बालन के भूल भूलैया भूल भुलैया नहीं है। भूल भुलैया 2 की पहली भूल भूलैया से बहुत तुलना की जा रही है। लेकिन डायरेक्टर अनीष बाज्मी पहले ही बोल चुके हैं कि अक्षय और विद्या इस मूवी की स्क्रिप्ट में फिट नहीं बैठ पा रहे है। उन्होंने बोला है कि इस मूवी की स्टोरी पूरी तरह से अलग है। सिवाय राजपाल के और कोई कैरेक्टर दोबारा इस मूवी में नहीं लिया गया है। इसलिए मूवी की तुलना करना गलता है। वहीं कार्तिक आर्यन भी बोल चुके हैं कि उनकी अक्षय कुमार से तुलना नहीं करना सबसे अच्छा है। उन्होंने बोला है कि उनको देखकर ही तो वो बड़े हुए हैं और ऐसे में उनको कैसे अक्षय के कंपेयर कर सकते है।

एक बार फिर नव्या ने सिद्धांत की फोटोज पर किया कमेंट

बॉलीवुड इंडस्ट्री में आए दिन तमाम सिलेब्स के अफेयर की खबरें हमेशा ही चर्चाओं में बनी रहती है। इन दिनों एक्टर सिद्धांत चतुर्वेदी और अमिताभ बच्चन की नातिन नव्या नवेली नंदा के कथित अफेयर की चर्चाएं इन दिनों तेजी से बढ़ रही है। ये दोनों आए दिन एक–दूसरे की सोशल मीडिया पर रिएक्शन देते हुए दिखाई दे रही है। अब सिद्धांत चतुर्वेदी ने अपनी एक तस्वीर शेयर की है जो नव्या नवेली नंदा को पसंद आई है।

सिद्धांत चतुर्वेदी ने शेयर किया पोस्टरू सिद्धांत चतुर्वेदी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी एक मिरर सेल्फी भी साझा कर दी है। इसमें वह शर्टलेस दिखाई दे रहे है। इसके साथ

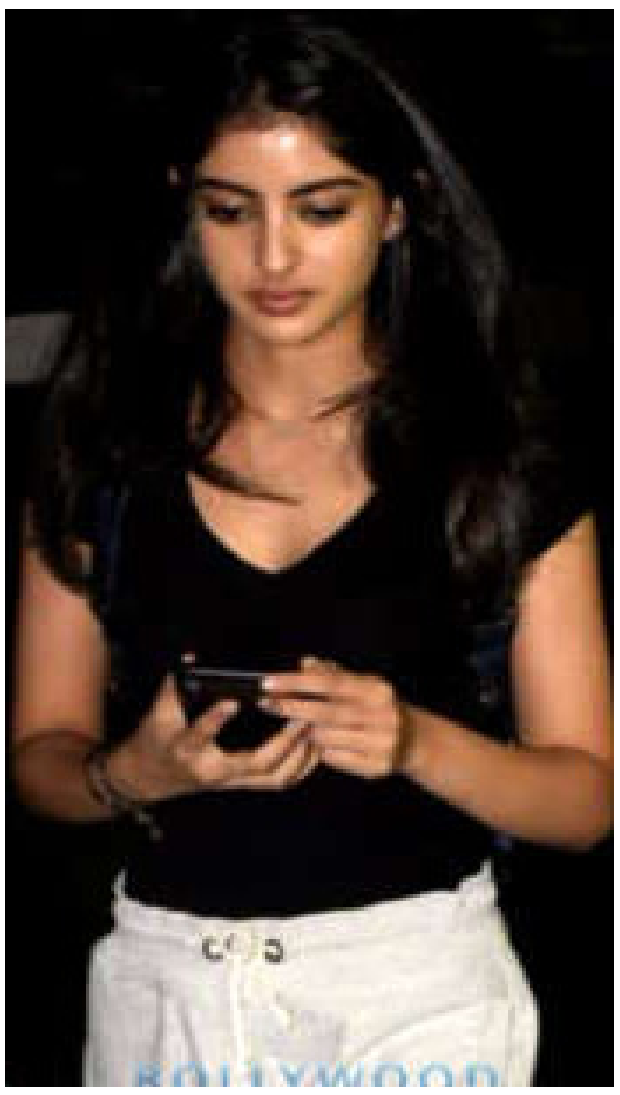

उन्होंने लिखा है, आज ज्यादा, कल हम कम थे... मैंने तुम्हें तब देखा था, जब मुझे कोई नहीं देखता था, आज तुम हो, और मैं भी यहां, और ये नजरें हम पर, आज ज्यादा, कल कम थे...। नव्या नवेली नंदा को सिद्धांत चतुर्वेदी के ये शायराना अंदाजा और शर्टलेस बॉडी बहुत भा गई है। नव्या नवेली नंदा ने सिद्धांत चतुर्वेदी की पोस्ट को लाइक किया है।

सिद्धांत चतुर्वेदी और नव्या नवेली नंदी की पोस्टरू बता दें कि इससे पहले नव्या नवेली नंदा और सिद्धांत चतुर्वेदी चांद से जुड़ा हुआ अपनी पोस्ट पर कैप्शन भी दे डाला है। इसी तरह से दोनों के रिलेशनशिप की खबरों को और भी मजबूती मिलने लगी है। हालांकि, नव्या नवेली नंदा और सिद्धांत चतुर्वेदी की तरफ से अपने रिलेशनशिप पर कुछ भी नहीं बोला है। फिलहाल, दोनों के फैंस का मानना है कि उनके पसंदीदा सितारे रिलेशिनशिप में हैं।

एक बार फिर ट्रोलर्स के निशाने पर आई शिल्पा शेट्टी, किसी ने कहा– ओवरएक्टिंग की दुकान तो किसी ने कही ये बात...

शिल्पा शेट्टी इंडस्ट्री की बहुत पॉपुलर स्टार हैं. सोशल मीडिया पोस्ट्स, पब्लिक अपीयरेंस और कई चीजों की वजह से शिल्पा शेट्टी चर्चाओं का विषय बनी रहती है. मंगलवार को अभिनेत्री मुंबई में स्पॉट हुईं. हमेशा शिल्पा शेट्टी को पैपराजी से बात करते और उन्हें पोज देते देखा आ चुका है, लेकिन इस बार शायद शिल्पा शेट्टी का मूड अच्छा नहीं था. पैपराजी को उन्होंने पोज देने से साफ मना का दिया. शिल्पा शेट्टी काफी थकी हुई दखाई दी. हालांकि, शिल्पा शेट्टी ने हल्की सी स्माइल पास करके पैपराजी को ग्रीट किया और साउथ सुपरस्टार यश की मूवी केजीएफ चौप्टर 2 की तारीफ भी की. ट्रोल्स के निशाने पर आईं शिल्पारू कुछ लोगों ने शिल्पा शेट्टी को इस बात पर ट्रोल करना शुरू किया है. कई ने उनके पति राज कुंद्रा को पोर्नोग्राफी मामले के लिए ट्रोल कर दिया. एक यूजर ने लिखा, ओवरएक्टिंग की दुकान. एक और यूजर ने लिखा, ये बस अपने पति की बनाई मूवी देखती है. उसके बारे में पूछो तो पूरा एक्स्प्लेन करके बताएगी. एक यूजर ने तो शिल्पा शेट्टी को अनसक्सेसफुल अभिनेत्री तक कह डाला. जबसे राज कुंद्रा पोर्नोग्राफी मामले के सिलसिले में जमानत पर बाहर आए हैं, तभी से ट्रोल्स के निशाने पर शिल्पा शेट्टी आ चुकी है. खुद को शिल्पा शेट्टी पिछले कुछ वक्त से बहुत लो प्रोफाइल रख रही हैं. हालांकि, वह अपनी नॉर्मल लाइफ में वापस आ चुकी है और इंडस्ट्री के अंदर वह काफी सक्रीय दिखाई देती है. हाल ही में शिल्पा शेट्टी ने रोहित शेट्टी के ह्ज्जज्ज सीरीज इंडियन पुलिस फोर्स में हाजिरी दर्ज कराई है. इस सीरीज में सिद्धार्थ मल्होत्रा और विवेक ओबेरॉय भी दिखाई देने वाले है.

नेहा पर चढ़ा पुष्पा के इस गाने का रंग, देशी अंदाज में लगे ठुमके

साउथ मूवी इंडस्ट्री के सुपरस्टार अल्लू अर्जन और अभिनेत्री रश्मिका मंदाना की मूवी पुष्पाः द राइज का जादू आज भी हर किसी पर छाया है। इस मूवी में सामंथा रुथ प्रभु ने आइटम नंबर किया है, जिसका टाइटल है। इस गाने ने इंटरनेट पर हंगामा मचा दिया है। गाने पर अब तक लाखों रील्स भी बनाई जा चुकी है, जो सोशल मीडिया पर वायरल होने लगी है। खास बात ये है कि सामंथा के इस गाने पर कई सेलेब्स भी रील्स बना रहे है, इसमें अब सिंगर नेहा कक्कड़ का नाम भी शामिल हो गया है। नेहा कक्कड़ ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया है, जिसमें वह एक खास स्थान पर सामंथा के गाने पर हॉट डांस करती हुई नजर आ रही है।

नेहा कक्कड़ ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम पर अपना डांस वीडियो साझा कर दिया है। इस वीडियो में देखा जा सकता है कि नेहा कक्कड़ श्पुष्पाय के गाने पर डांस करती हुई नजर आ रही है। इस वीडियो की खास बात ये है कि नेहा कक्कड़ नीले आसमान के नीचे और समुंद्र किनारे हॉट अंदाज में डांस करती दिखाई दे रही है। इस बीच नेहा रेत पर बैठकर कर हूबहू सामंथा की तरह डांस कर रही हैं, जिसमें वह बहुत सुंदर लग रही हैं। लुक्स के बारें में बात की जाए तो नेहा ने ब्लू कलर का आउटफिट पहन रखा है और साथ ही आंखों पर गॉगल्स भी लगाए हुए हैं।

नेहा कक्कड़ का ये वीडियो उनके पति रोहनप्रीत सिंह को खूब पसंद आया है और इसी कारण से उन्होंने वीडियो पर कमेंट कर सिंगर की तारीफ भी कर दी है। रोहनप्रीत ने कमेंट करते हुए लिखा है, श्मेरी सुपर टैलेंटेड हॉटी।य इसके साथ, कई फैंस ने भी नेहा कक्कड़ के इस वीडियो पर कमेंट करते हुए उन्हें डांसिग क्वीन कहा है। बता दें नेहा के इस वीडियो को महज कुछ ही घंटों में 9 लाख से भी अधिक व्यूज मिल चुके हैं और ये आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है।

बेटी के बॉलीवुड में डेब्यू को लेकर अजय ने कही ये बड़ी बात

बॉलीवुड स्टार अजय देवगन की बेटी न्यासा इन दिनों सोशल मीडिया पर चर्चाओं का विषय बनी हुई है। कभी उनकी कोई फोटो वायरल हो जाती है, तो कभी वो पार्टी में जाते हुए नजर आती है। खब्बरों की माने तो न्यासा ने हाल ही में अपना 19वां बर्थडे सेलिब्रेट किया। जिसकी फोटोज खूब वायरल हुई थी। इसी दौरान काजोल और अजय देवगन की बेटी न्यासा को लेकर एक बड़ी खबर सुनने के लिए मिली है।

बॉलीवुड में डब्यू नहीं करेंगी न्यासारू बॉलीवुड स्टार एक्टर अजय देवगन और काजोल की बेटी न्यासा को लेकर रोज कुछ न कुछ नया सुनने के लिए मिल ही जाता है। अभी जब हाल में उन्होंने अपना 19वां बर्थडे सेलिब्रेट किया था, तो उसकी फोटोज सोशल मीडिया पर जमकर वायरल होने लगी थी। इन फोटोज को लेकर खूब बातें भी हुई। अजय देवगन की बेटी न्यासा को लेकर कई दिनों से बोला जा रहा था कि वो जल्द ही बॉलीवुड में डब्यू कर सकती है। जिसको लेकर अब न्यासा के पिता अजय देवगन ने एक साक्षत्कार के बीच खुलासा किया था कि आवश्यकता नहीं है उनकी बेटी बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली है। जिसके आगे अजय ने बोला है कि उन्होंने अपने बच्चों को कभी किसी काम के लिए फोर्स नहीं किया है। जिसके उपरांत अजय का एक और साक्षत्कार खूब चर्चा में बना हुआ है। जिसमें उन्होंने कहा था कि उनकी बेटी को बॉलीवुड में कार्य करने की कोई चाह नहीं है। लेकिन कभी भी कुछ भी बदल सकता है।

बोनी कपूर के बेटी ने किया डेब्यूरू अभी हाल में बॉलीवुड के जाने–माने प्रोड्यूसर बोनी कपूर की बेटी अंशुला कपूर ने भी अपने बॉलीवुड डेब्यू को लेकर बड़ी बात कही है। अंशुला कपूर जल्द ही आपको लव रंजन की मूवी में दिखाई देने वाली है।